सरस्वती

मणिका संस्कृत व्याकरण

(कक्षा-8)

© New Saraswati House (India) Private Limited

लेखिका

सुनीता सचदेव

एम०ए० (संस्कृत), बी०एड्०
सेवानिवृत्त संस्कृत विभागाध्यक्षा
भटनागर इंटरनेशनल स्कूल
वसंत कुंज

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड
नई दिल्ली-110002 (इंडिया)

NEW SARASWATI HOUSE

Head Office : Second Floor, MGM Tower, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)
Registered Office : A-27, 2nd Floor, Mohan Co-operative Industrial Estate, New Delhi–110 044

Phone : +91-11-4355 6600
Fax : +91-11-4355 6688
E-mail : delhi@saraswatihouse.com
Website : www.saraswatihouse.com
CIN : U22110DL2013PTC262320
Import-Export Licence No. 0513086293

Branches:
• Ahmedabad: Ph. 079-2657 5018 • Bengaluru: Ph. 080-2675 6396
• Chennai: Ph. 044-2841 6531 • Dehradun: Ph. +91-98374 52852
• Guwahati: Ph. 0361-2457 198 • Hyderabad: Ph. 040-4261 5566 • Jaipur: Ph. 0141-4006 022
• Jalandhar: Ph. 0181-4642 600, 4643 600 • Kochi: Ph. 0484-4033 369 • Kolkata: Ph. 033-4004 2314
• Lucknow: Ph. 0522-4062 517 • Mumbai: Ph. 022-2876 9871, 2873 7090
• Nagpur: Ph. +91-70661 49006 • Patna: Ph. 0612-2275 403 • Ranchi: Ph. 0651-2244 654

Revised edition 2018
Reprinted 2019, 2020

ISBN: 978-93-5272-265-5

The moral rights of the author has been asserted.

© New Saraswati House (India) Private Limited

Publisher's Warranty: The Publisher warrants the customer for a period of 1 year from the date of purchase of the Book against any Printing/Binding defect or theft/loss of the book.
Terms and Conditions apply: For further details, please visit our website www.saraswatihouse.com or call us at our Customer Care (toll free) No.: +91-1800 2701 460
Jurisdiction: All disputes with respect to this publication shall be subject to the jurisdiction of the Courts, Tribunals and Forums of New Delhi, India Only.
All rights reserved under the Copyright Act. No part of this publication may be reproduced, transcribed, transmitted, stored in a retrieval system or translated into any language or computer, in any form or by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopy or otherwise without the prior permission of the copyright owner. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Product Code: NSS2MSV080SKTAB17CBN

This book is meant for educational and learning purposes. The author(s) of the book has/have taken all reasonable care to ensure that the contents of the book do not violate any copyright or other intellectual property rights of any person in any manner whatsoever. In the event the author(s) has/have been unable to track any source and if any copyright has been inadvertently infringed, please notify the publisher in writing for any corrective action.

PRINTED IN INDIA
By Vikas Publishing House Private Limited, Plot 20/4, Site-IV, Industrial Area Sahibabad, Ghaziabad–201 010 and published by New Saraswati House (India) Private Limited, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)

© New Saraswati House (India) Private Limited

प्राक्कथन

प्यारे बच्चो! संस्कृत को समझने, बोलने तथा लिखने के लिए हमें व्याकरण के कुछ नियमों को समझना होगा। प्रस्तुत पुस्तक संप्रेषणात्मक पाठ्यक्रम पर आधारित है। आशा है इस पुस्तक के द्वारा संस्कृत भाषा को समझकर आप सब भी इस भाषा को बोल-चाल का माध्यम बना सकेंगे। इस पुस्तक में सरल भाषा में संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार व्याकरण के नियमों को समझाया गया है। आशा है छात्र इस प्रयास से लाभान्वित होंगे। सभी विद्वद्गण अपने अनुपम सुझाव देकर पुस्तक को और उपयोगी बनाने में हमारी सहायता करें।

मैं विशेष रूप से न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा०लि० की आभारी हूँ जो छात्रों की पाठ्य-सामग्री को अधिकाधिक रोचक तथा उपयोगी बनाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहते हैं। मैं कृतज्ञ हूँ अपने पिता श्री मेहरचन्द जावल जी की जिनकी प्रेरणा ने मुझे संस्कृत विषय के साथ जोड़कर मेरे जीवन को संस्कृतमय बनाया ताकि मैं अपने देश के इस सुंदर व गरिमा से युक्त भाषा-ज्ञान को पा सकूँ तथा इसे आगे फैला भी सकूँ।

–सुनीता सचदेव

© New Saraswati House (India) Private Limited

संस्कृत भाषा का परिचय

प्रिय बच्चो! संस्कृत शब्द का अर्थ है–संस्कार अर्थात् पवित्र की गई भाषा। नाम के ही अनुसार संसार में केवल संस्कृत भाषा ही दोषहीन व्याकरण वाली पवित्र भाषा है।

संस्कृत भाषा उस भारोपीय परिवार की भाषा है जिससे सभी भाषाओं का जन्म हुआ। भारत की अनेक भाषाओं का जन्म संस्कृत भाषा से ही हुआ।

प्राचीन काल में सभ्य समाज संस्कृत भाषा बोलता था तथा ग्रामीण समाज प्राकृत भाषा बोलता था जो कि संस्कृत का ही परिवर्तित रूप है। चारों वेद, उपनिषद्, पुराण इत्यादि इसी भाषा में लिखे गए। रामायण तथा महाभारत भी इसी भाषा में लिखे गए।

संस्कृत के अनेक कवियों में से कुछ प्रसिद्ध नाम हैं–कालिदास, भारवि, बाणभट्ट, माघ इत्यादि। आज भी अनेक विद्वान इस भाषा को अपनी रचनाओं से समृद्ध कर रहे हैं। सभी संस्कृत प्रेमियों का मन दक्षिण भारत में कर्नाटक के 'माटुर' और 'होसहल्ली' तथा मध्यप्रदेश के 'झिरी' गाँव जाने को तो करता ही होगा जहाँ के सभी लोग केवल संस्कृत भाषा ही बोलते हैं। संसार में संस्कृत के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसी भाषा नहीं है जो प्राचीनतम होते हुए भी वर्तमान युग में बोली जाती हो। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार संसार की सभी भाषाओं में से 'संस्कृत भाषा' ही कम्प्यूटर के प्रयोग के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है। कुछ विद्वानों के अनुसार संस्कृतभाषी छात्र संसार की किसी भी भाषा को अन्य लोगों से अधिक जल्दी व आसानी से सीख सकते हैं। संभवतः संस्कृत भाषा के इसी गुण को जानकर विदेशों में भी दो विद्यालयों में संस्कृत भाषा को अनिवार्य विषय बना दिया गया है। 'जर्मनी' में भी संस्कृत भाषा को सीखने वाले लोग दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। हमें गर्व है कि 'संस्कृतभाषा' हमारे भारत देश की भाषा है।

पाठ्यक्रम

1. **सन्धिः** – स्वर में दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, अयादि, पूर्वरूप, प्रकृति भाव तथा व्यञ्जने मोऽनुस्वारः, अनुस्वार (परसवर्ण), छत्वं, जश्त्वं, श्चुत्वं, ष्टुत्वं, चर्त्व, तुगागमः विसर्ग सन्धिः च।
2. **शब्दरूप-प्रकरणम्** – देव, मुनि, साधु, पितृ, लता, मति, नदी, फल, अस्मद्, युष्मद्।
3. **धातुरूप-प्रकरणम्** – पठ्, गम्, नम्, चल्, खाद्, दृश्, अस्, भू, पा, हन्, घ्रा, सेव्, मुद् आदयः।
4. **समासाः** – अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्विगु, द्वन्द्व, कर्मधारय तथा बहुव्रीहि समासः।
5. **पर्यायाः एवम् विपर्ययाः**
6. **प्रत्ययाः** – क्त, क्तवतु, ल्यप्, क्त्वा, तुमुन्, तव्यत्, अनीयर्, शतृ, शानच्, मतुप्, णिनि, ठक्, तल्, त्व, टाप् तथा ङीप् प्रत्ययाः।
7. **अव्ययाः** – झटिति, नोचेत्, नक्तम् इत्यादयः।
8. **वाच्य-परिवर्तनम्** – कर्तृ, कर्म तथा भाव वाच्यानुसार रूपाणि।
9. **समयलेखनम्** – घटिकां दृष्ट्वा समय-लेखनम्।
10. **संख्या** – एकतः शत पर्यन्तम्, संख्यावाचिशब्दानां रूपाणि एकतः पंच पर्यन्तम्।
11. **अशुद्धिशोधनम्**
12. **पत्रलेखनम्** – (*i*) कक्षायाम् प्रथमस्थानं प्राप्तुं मित्रं प्रति वर्धापनपत्रम् (*ii*) वार्षिकोत्सवस्य वर्णनं कुर्वन् मित्रं प्रति (*iii*) शैक्षिकयात्रा हेतु धन-प्रेषणाय पितरम् प्रति (*iv*) पीडितजनानाम् सहायतार्थं गन्तुम् तत्परम् मित्रम् प्रति (*v*) स्वभगिन्याः विवाहे निमंत्रणं दातुम् मित्रं प्रति (*vi*) विद्यालयस्य वर्णनं कुर्वन् मित्रं प्रति (*vii*) विद्यालयस्य क्रीडादिवसस्यवर्णनं कुर्वन् मित्रं प्रति (*viii*) स्वअध्ययनस्य प्रगतिम् वर्णयन् अग्रजं प्रति (*iv*) नवमीकक्षायाम् प्रवेशं प्राप्तुम् प्रधानाचार्यं प्रति (*x*) रक्तदान-शिविरे रक्तदानोपरान्तम् पितरम् प्रति।
13. **वार्त्तालापः**
14. **चित्रवर्णनम्** – मंजूषायाः सहायतया।
15. **अपठितगद्यांशाः** – 40-50 तथा 80-100 पदपरिमिताः।

© New Saraswati House (India) Private Limited

विषय-सूची

खण्ड 'क' (अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्)

1. कारक उपपदविभक्तयः च 09
2. शब्दरूप-प्रकरणम् 17
3. धातुरूप-प्रकरणम् 27
4. सन्धिः 52
5. समासाः 65
6. पर्यायाः एवम् विपर्ययाः 73
7. अव्ययाः 80
8. प्रत्ययाः 85
9. वाच्य-परिवर्तनम् 102
10. समयः 109
11. संख्या-ज्ञानम् 113
12. अशुद्धिशोधनम् 122

खण्ड 'ख' (रचनात्मकं कार्यम्)

13. पत्रलेखनम् 127
14. वार्त्तालापः 133
15. चित्रवर्णनम् 137

खण्ड 'ग' (अपठित-अवबोधनम्)

16. गद्यांशाः 145
(40-50 पदपरिमिताः एवं 80-100 पदपरिमिताः)

- अभ्यास-प्रश्नपत्रम्-1 165
- अभ्यास-प्रश्नपत्रम्-2 169

© New Saraswati House (India) Private Limited

शुरू से ही संस्कृत परीक्षा की तैयारी कैसे करें?

1. उच्चारण

- संस्कृत भाषा में उच्चारण का महत्व बहुत अधिक है। हम जैसा पढ़ते हैं वैसा ही लिखते हैं। शुद्ध पढ़ें तथा शुद्ध लिखें।
- ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का (एक बार ताली बजाने जितना) समय लगता है तथा दीर्घ स्वरों के लिए दो मात्रा का (दो बार ताली बजाने जितना) समय लगता है।
- प्लुत स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से तीन गुणा या उससे भी अधिक समय लगता है।
- **अ** से युक्त व्यंजनों को ध्यान से पढ़ें तथा बोलें, क्योंकि **अ** की कोई मात्रा नहीं होती।
- संयुक्त स्वरों को ध्यान से बोलें। संयुक्त वर्णों का उच्चारण करते समय शुद्ध व्यंजन से पहले वाले अक्षर पर बल देना चाहिए।
- ऋ तथा र वर्णों का उच्चारण ध्यान से करें।

2. लेखन

- प्रत्येक वर्ण को सुंदर व स्पष्ट लिखने का अभ्यास करें।
- संयुक्त वर्णों को विशेष ध्यान से लिखें।
- अनुस्वार का उच्चारण जहाँ हो उसी वर्ण के ऊपर उसे लिखना चाहिए; यथा–**संस्कृतम्।**
- स्वर से युक्त 'र' इत्यादि वर्ण शुद्ध व्यंजनों के नीचे लिखे जाएँगे; उदाहरणार्थ **शुद्धम्** पद में द् + ध वर्ण हैं। देखने में 'द्' स्वरयुक्त लगता है व 'ध' स्वरहीन, क्योंकि हमें लगता है कि 'पूर्ण' का स्थान ऊपर होता है। संस्कृत भाषा हमें विनम्रता सिखाती है। **पूर्णाक्षर** (स्वरयुक्त अक्षर) को विनम्रता से नीचे झुककर और **शुद्ध** (स्वर से रहित) व्यंजन को ऊपर रखकर सहारा देने का विधान करती है।
- पूरे अंक पाने हों तो अभ्यास प्रतिदिन करना चाहिए।

© New Saraswati House (India) Private Limited

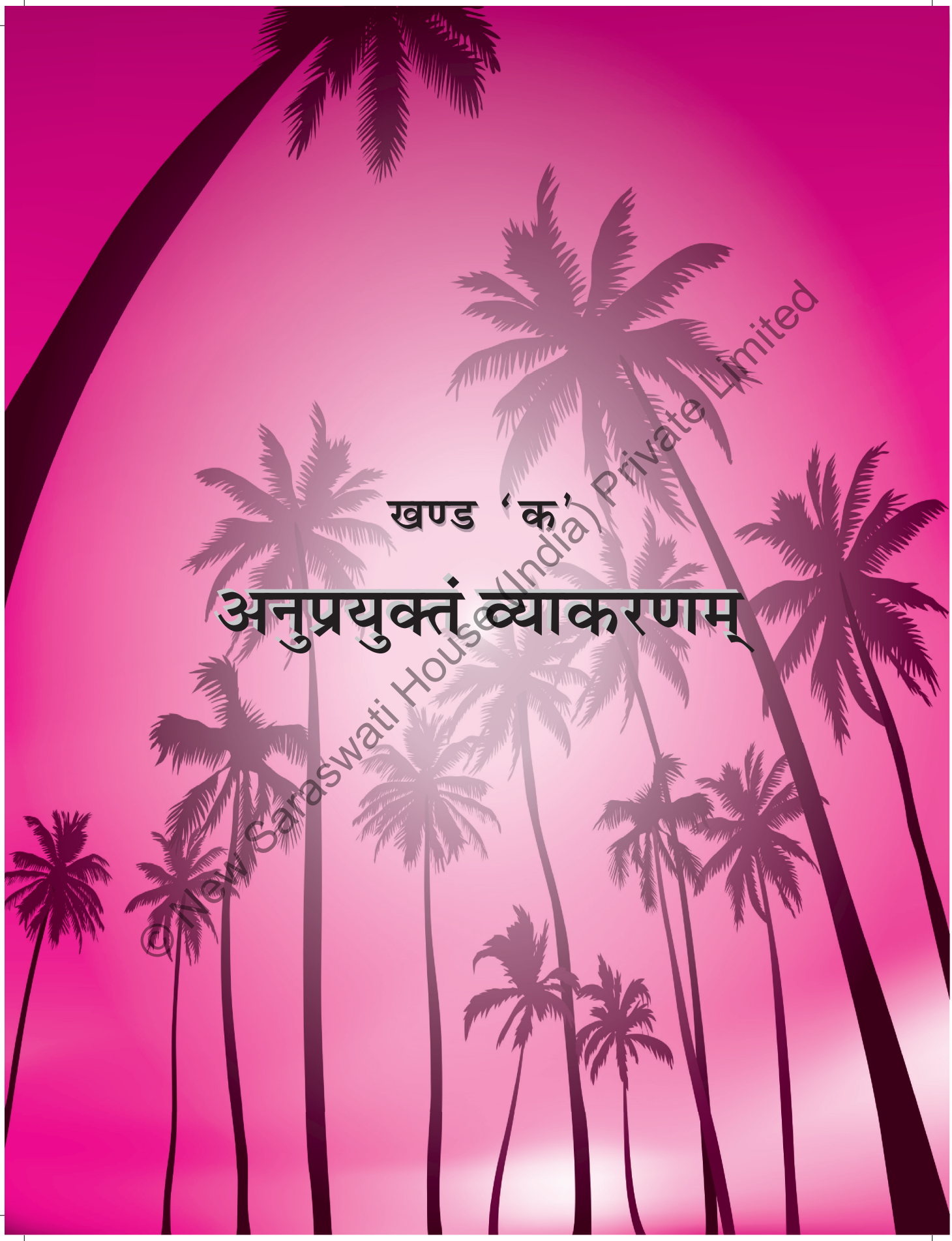

खण्ड 'क'

अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्

© New Saraswati House (India) Private Limited

© New Saraswati House (India) Private Limited

1 कारक उपपदविभक्तयः च

प्यारे बच्चो! जैसा कि पिछली कक्षाओं में हम पढ़ चुके हैं कि वाक्य में विभिन्न पद जो क्रिया की सिद्धि में सहायक होते हैं, उन्हें कारक कहते हैं। ये आठ होते हैं–

कारक

1	2	3	4	5	6	7	8
कर्ता	कर्म	करण	सम्प्रदान	अपादान	सम्बन्ध	अधिकरण	संबोधन

शब्दों के साथ लगाए जाने वाले प्रत्यय ही उनकी विभक्तियाँ होती हैं। विभक्तियाँ सात होती हैं–

विभक्तयः

1	2	3	4	5	6	7
प्रथमा	द्वितीया	तृतीया	चतुर्थी	पंचमी	षष्ठी	सप्तमी

प्रत्येक कारक का अपना एक चिह्न होता है।

कारक	चिह्न	विभक्ति	प्रयोग
1. कर्ता	*ने (–)*	प्रथमा	मैंने किया
2. कर्म	*को (–)*	द्वितीया	उसको देखता है
3. करण	*से (के द्वारा)*	तृतीया	के द्वारा लिखा
4. सम्प्रदान	*के लिए*	चतुर्थी	के लिए देता है
5. अपादान	*से (अलग होने पर)*	पंचमी	से अलग होता है
6. सम्बन्ध	*का, के, की, रा, रे, री*	षष्ठी	तुम्हारा, मेरा
7. अधिकरण	*में, पर*	सप्तमी	मेज पर, टोकरी में
8. सम्बोधन	*हे, भो, अरे, हे*		

विभक्तियों के चिह्न **तिरछे** लिखे गए हैं। ये चिह्न शब्दों में लगी विभक्ति के अनुसार शब्दों के अर्थ बताते हैं। उदाहरण के लिए :

1. प्रथमा (*ने*) बालः	= एक बालक ने	2. प्रथमा (*ने*) बालौ	= दो बालकों ने
3. प्रथमा (*ने*) बालाः	= अनेक बालकों ने	4. द्वितीया (*को*) बालम्	= एक बालक को
5. द्वितीया (*को*) बालौ	= दो बालकों को	6. द्वितीया (*को*) बालान्	= अनेक बालकों को

© New Saraswati House (India) Private Limited

इसी प्रकार सभी **पदों** के अर्थ देखिए :

रूपों के अर्थ

बाल शब्द के रूप

विभक्तियाँ	चिह्न	कारक	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ने (–)	कर्ता	बाल: (एक बालक ने)	बालौ (दो बालकों ने)	बाला: (अनेक बालकों ने)
द्वितीया	को	कर्म	बालम् (एक बालक को)	बालौ (दो बालकों को)	बालान् (अनेक बालकों को)
तृतीया	से, के द्वारा	करण	बालेन (एक बालक से)	बालाभ्याम् (दो बालकों से)	बालै: (अनेक बालकों से)
चतुर्थी	के लिए	सम्प्रदान	बालाय (एक बालक के लिए)	बालाभ्याम् (दो बालकों के लिए)	बालेभ्य: (अनेक बालकों के लिए)
पंचमी	से (अलग)	अपादान	बालात् (एक बालक से)	बालाभ्याम् (दो बालकों से)	बालेभ्य: (अनेक बालकों से)
षष्ठी	का, के, की रा, रे, री	संबंध	बालस्य (एक बालक का)	बालयो: (दो बालकों का)	बालानाम् (अनेक बालकों का)
सप्तमी	में/पर	अधिकरण	बाले (एक बालक पर)	बालयो: (दो बालकों पर)	बालेषु (अनेक बालकों पर)
–	हे, भो, अरे	सम्बोधन	हे बाल! (हे एक बालक!)	हे बालौ! (हे दो बालको!)	हे बाला:! (हे अनेक बालको!)

© New Saraswati House (India) Private Limited

विभक्तयः

1. कारक-विभक्तयः
2. उपपद-विभक्तयः

1. कारक-विभक्तयः–कारक विभक्तियाँ क्रियापद को ध्यान में रखकर लगाई जाती हैं; यथा–

साधना पुस्तकम् पठति।

यहाँ साधना पद पठति क्रिया का कर्ता है अतएव उसमें प्रथमा विभक्ति एवं क्रिया का फल जिस पर पड़ रहा है वह पुस्तक है, अतएव उसमें द्वितीया विभक्ति लगाई गई है।

2. उपपद-विभक्तयः–किसी विशेष पद के साथ जब सामान्य कारक विभक्ति न लगाकर अन्य विभक्ति लगाई जाती है तब उसे उपपद विभक्ति कहते हैं; यथा– नगरम् परितः सरणिः अस्ति।

यहाँ कारक चिह्नों के अनुसार नगर शब्द में षष्ठी विभक्ति लगनी चाहिए थी (नगर के चारों तरफ-सड़क है।) परन्तु परितः पद के योग में नगर शब्द में द्वितीया विभक्ति लगाई गई है।

अब हम इनका प्रयोग विस्तार से देखते हैं–

1. प्रथमा विभक्तिः–'कर्तरि प्रथमा'–कर्तृवाच्य में कर्ता कारक में प्रथमा विभक्ति लगाई जाती है; जैसे–

1. रमा पुस्तकं पठति।
2. नराः नेत्राभ्यां पश्यन्ति।
3. बालिके मञ्चे नृत्यतः।
4. त्वम् कुत्र गच्छसि?
5. सूर्यः उदेति।
6. खगाः आकाशे उड्डयन्ति।

2. द्वितीया विभक्तिः–कर्मणि द्वितीया–कर्ता के कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

1. भरतः शत्रुघ्नः च वनं गच्छतः।
2. छात्राः लेखं लिखन्ति।
3. चित्रकाराः चित्रं रचयन्ति।
4. कुम्भकारः कुम्भं रचयति।
5. श्रमिकः भारं वहति।
6. अध्यापिका ज्ञानं यच्छति।

उपपद-विभक्तयः

निम्नलिखित धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति लगती है।

√गम्	= जाना	– आम्रपाली पाटलिपुत्रं गच्छति।
√नम्	= नमस्कार करना	– सः गुरुं नमति।
√नी	= ले जाना	– श्वश्रूः स्नुषां नयति।
√पच्	= पकाना	– जनकः अपि मात्रा सह भोजनं पचति।
√रक्ष्	= रक्षा करना	– सैनिकाः सीमां रक्षन्ति।
√याच्	= माँगना	– पुत्रः पितरं रुप्यकं याचति।
अधि + √शी	= लेटना	– विष्णुः बैकुण्ठम् अधिशेते।

© New Saraswati House (India) Private Limited

अधि + √स्था	= ठहरना	– अद्य अतिथिः तव कक्षम् अधितिष्ठति।
√प्रच्छ्	= पूछना	– शिष्यः अध्यापकं प्रश्नं पृच्छति।
अभितः	= चारों ओर	– उद्यानम् अभितः सरणिः अस्ति।
परितः	= चारों ओर	– उद्यानम् परितः सरणिः अस्ति।
सर्वतः	= चारों ओर	– उद्यानं सर्वतः सरणिः अस्ति।
धिक्	= धिक्कार	– धिक् चौरम्।
प्रति	= ओर	– पथिकः ग्रामं प्रति गच्छति।
उभयतः	= दोनों तरफ	– मार्गम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।
नाना/विना	= बिना	– परिश्रमम् विना ज्ञानम् न लभते।
समया/निकषा	= समीप	– सरोवरं निकषा/समया परिखा अस्ति।
उपसर्ग + √क्रुध्	= क्रोध करना	– जनकः पुत्रम् अभिक्रुध्यति।
उपसर्ग + √वस्	= रहना	– धनिकः भवनम् उपवसति।

3. तृतीया विभक्तिः–करणे तृतीया–कर्तृवाच्य के करणकारक में तृतीया विभक्ति लगती है; जैसे–

1. रामः रावणम् बाणेन अमारयत्।
2. अहम् द्विचक्रिकया तव गृहम् आगमिष्यामि।
3. जीवाः मुखेन वदन्ति।
4. छात्राः कलमेन लिखन्ति।
5. सः अलेन मुखं प्रक्षालयति।
6. अम्बा वायुयानेन आगच्छति।

उपपद-विभक्तयः

निम्नलिखित पदों के योग में तृतीया विभक्ति होती है–

प्रकृति	= स्वभाव अर्थ में	– सः प्रकृत्या सज्जनः।
हीनः	= रहित	– धर्मेण हीनः नरः न शोभते।
विना	= बिना	– विद्यया विना योग्यता न भवति।
अलम्	= मत करो (निषेधार्थे)	– अलम् कोलाहलेन।
सह/साकम्/सार्धम्	= साथ	– मृगः मृगैः साकम्/सार्धम्/सह धावति।
सदृशः	= समान	– सः त्यागे रामेण सदृशः।
किम्	= क्या	– अनेन मूर्खेण पुत्रेण किम्।
अंग विकार में	= यथा काणः (काना), खल्वाटः (गंजा), पङ्गुः/खञ्जः (लंगड़ा) इत्यादि।	– सः नेत्रेण काणः। सः पादेन खञ्जः अभवत्। वृद्धः शिरसः खल्वाट्ः अस्ति।

©New Saraswati House (India) Private Limited

4. चतुर्थी विभक्तिः—सम्प्रदाने चतुर्थी—कर्ता जिसके लिए कार्य करता है उसमें चतुर्थी विभक्ति लगती है; जैसे—

1. जनकः सुतायै पुस्तकानि आनयति।
2. नद्यः परोपकाराय वहन्ति।
3. भक्ताः देवदर्शनाय गच्छन्ति।
4. शिष्याय विद्यां ददाति।
5. सफलतायै पुस्तकानि पठति।
6. सः अध्ययनाय गच्छति।

उपपद-विभक्तयः

निम्नलिखित पदों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है—

√दा (यच्छ्)	=	देना	— माता पुत्राय भोजनं यच्छति।
√रुच्	=	अच्छा लगना	— मह्यम् मोदकं रोचते।
√कुप्/√क्रुध्	=	क्रोध करना	— अध्यापकः मूर्खाय छात्राय कुप्यति/क्रुध्यति।
√स्पृह्	=	इच्छा करना	— धनिकः ज्ञानाय न स्पृह्यति।
√नमः	=	नमस्कार हो	— भगवते वासुदेवाय नमः।
√अलम्	=	पर्याप्त/काफी	— इदम् भोजनम् मह्यम् अलम्।
√स्वाहा	=	आहुति देना	— अग्नये/इन्द्राय स्वाहा।
√स्वस्ति	=	कल्याण हो	— छात्रेभ्यः स्वस्ति।
√कथ्	=	कहना	— गुरुः छात्रेभ्यः कथयति।

5. पञ्चमी विभक्तिः—अपादाने पञ्चमी—पृथक् होने के अर्थ में अपादान कारक में पंचमी विभक्ति लगती है; जैसे—

1. वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
2. आकाशात् पुष्पाणि वर्षन्ति।
3. मेघात् वर्षा भवति।
4. आचार्यात् वेदं पठति।
5. बीजात् अंकुरः भवति।
6. विवेकः कुपथात् निवारयति।

उपपद-विभक्तयः

निम्नलिखित पदों के योग में पंचमी विभक्ति लगती है—

विना/ऋते	=	बिना	— ज्ञानम्/ज्ञानेन/ज्ञानात् विना न मुक्तिः।
प्र + √मद्	=	भूल/लापरवाही/आलस्य	— देशसेवात् मा प्रमद।

तुलना के लिए तरप्/इयसुन् प्रत्यय के योग में—जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गात् अपि गरीयसी।

बहिः	=	बाहर	— गृहात् बहिः उद्यानम् अस्ति।
पूर्वम्	=	पहले	— चैत्रः वैशाखात् पूर्वम् आगच्छति।
वि + √रम्	=	रुकना	— अध्ययनात् मा विरम।
√त्रै/ √रक्ष्	=	रक्षा करना	— सिद्धार्थः हंसम् अनुजात् रक्षति/त्रायते।
प्र + √भू	=	उत्पन्न होना	— गंगा हिमालयात् प्रभवति।

© New Saraswati House (India) Private Limited

6. षष्ठी विभक्तिः–संबंधे षष्ठी–संबंध बताने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

1. इदम् मम् गृहम् अस्ति।
2. चन्द्रस्य प्रकाशः शीतलः भवति।
3. सज्जनानां कृपा सर्वेभ्यः भवति।
4. सूर्यस्य प्रकाशः तीव्रः अभवत्।
5. लक्ष्मणः रामस्य अनुजः आसीत्।
6. इयं कृतिः कस्याः अस्ति?

उपपद-विभक्तयः

निम्नलिखित पदों के योग में षष्ठी विभक्ति लगती है–

√स्मृ	=	याद करना	– बालः मातुः स्मरति।
उप + √कृ	=	उपकार करना	– राजा प्रजायाः उपकुर्वन्ति।
समः/तुल्यः	=	समान	– बले सः भीमस्य तुल्यः/समः।
उपरि	=	ऊपर	– वृक्षस्य उपरि नीडः अस्ति।
अधः	=	नीचे	– वृक्षस्य अधः श्रमिकः स्वपति।
पुरतः	=	सामने	– गृहस्य पुरतः सरणिः अस्ति।
अग्रे	=	आगे	– सैनिकस्य अग्रे सैनिकः चलति।
निर्धारण में	=	निर्धारित करने में	– कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।

7. सप्तमी विभक्तिः–अधिकरणे सप्तमी–आधार में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

1. हरिः शय्यायां शेते।
2. शिशुः मातुः क्रोडे हसति।
3. खगाः नीडेषु वसन्ति।
4. पिकाः आम्रेषु कूजन्ति।
5. मुनिः कुटीरे यजति।
6. विद्यालयस्य परिसरे छात्रावासः अस्ति।

उपपद-विभक्तयः

निम्नलिखित पदों के योग में सप्तमी विभक्ति लगती है–

निर्धारणे–कवीनाम्/कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।

काकः खगानां/खगेषु धूर्तः भवति।

कुशल	=	चतुर	– रामः पठने कुशलः।
√स्निह्	=	स्नेह करना	– माता पुत्रे स्निह्यति।
चतुर	=	चालाक/होशियार	– चन्द्रगुप्तः न्याये चतुरः।
प्रवीणः	=	कुशल	– सोमः वीणावादने प्रवीणः।
दक्षः	=	कुशल	– सः धनुर्विद्यायाम् दक्षः।
विश्वस्	=	विश्वास करना	– आचार्या छात्रे विश्वसति।
भावे	=	समाप्त होने वाले कार्य तथा उसके कर्ता में–रामे वनं गते दशरथः पञ्चत्वं गतः।	

8. सम्बोधन कारक–बुलाने के लिए हे! अरे! इत्यादि चिह्नों का प्रयोग होता है। संबोधन कारक में कुछ अंतर के साथ प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

1. हे राधे! त्वम् किम् करोषि?
2. अरे सैनिकाः! किम् यूयम् देशम् रक्षथ?
3. हे लते! कूपस्य अग्रे एव घटः अस्ति।
4. अयि बालिकाः! यूयम् कथं न खेलथ?
5. भो बालकाः! यूयम् तत्र मा गच्छत।
6. हे पुत्र! अत्र आगच्छ।

© New Saraswati House (India) Private Limited

ध्यातव्यम्

- संज्ञा या सर्वनाम आदि शब्दों का संबंध क्रिया के साथ प्रकट करने के लिए कारक के विभक्ति चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।
- कुछ विद्वानों के अनुसार 'संबंध' और 'संबोधन' कारक नहीं कहलाते क्योंकि इनका साक्षात् संबंध क्रिया से नहीं होता।
- उपपद विभक्तियों में सामान्य कारक नियमों के बदले विशेष पदों के साथ दूसरी ही विभक्तियाँ लगती हैं।
- ये उपपद प्रायः अव्यय ही होते हैं।
- रूप चलने के बाद शब्द 'पद' बन जाते हैं।
- संस्कृत भाषा में पदों का ही प्रयोग होता है, शब्दों का नहीं।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. विना के योग में द्वितीया, तृतीया एवं पंचमी विभक्तियों में से किसी भी विभक्ति का प्रयोग किया जा सकता है।
2. निर्धारण में षष्ठी एवं सप्तमी दोनों विभक्तियों का प्रयोग होता है।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. कोष्ठकगतशब्दानाम् उचितरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत।

(कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उचित रूप से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

(क) 1. ..... पुस्तकम् पठन्ति। (छात्र)

2. ..... प्रति मा गच्छ। (कूप)

3. ..... अभितः मयूराः नृत्यन्ति। (कृष्ण)

4. कक्षायाम् ..... अलम्। (कोलाहल)

5. सः ..... अन्धः अस्ति। (नेत्र)

6. सः ..... खल्वाटः अस्ति। (शिरस्)

© New Saraswati House (India) Private Limited

(ख) 1. ..... नमः। (गणेश)

2. इदम् दुग्धम् ..... अलम्। (बाल)

3. सा ..... कुप्यति। (याचक)

4. किम् ..... कंकणम् रोचते? (युष्मद्)

5. ..... स्वाहा। (अग्नि)

6. ..... बहिः अतिथिः आगच्छति। (गृह)

II. मञ्जूषातः उचितं पदं विचित्य रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित पद चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

पतनात्	छात्रेषु	पुष्पैः	गायने	मह्यम्	सर्पात्	इन्द्राय	विद्यालयस्य
मातरम्	सोमवासरात्	ज्ञानात्	क्रोधेन	नृपस्य	वनात्	दुष्टान्	

1. ..... ऋते न मुक्तिः।
2. बालः ..... बिभेति।
3. सः बालम् ..... रक्षति।
4. अयम् ..... प्रासादः अस्ति।
5. बालः ..... स्मरति।
6. ..... विजयः श्रेष्ठतमः।
7. धिक् .....।
8. ..... पूर्वम् रविवासरः भवति।
9. ..... पठनम् रोचते।
10. ..... पुरतः एव मम गृहम् अस्ति।
11. ..... हीनः पादपः न शोभते।
12. अलम् .....।
13. मम माता ..... अति प्रवीणा।
14. ..... स्वाहाः।
15. शिशुः ..... बिभेति।

© New Saraswati House (India) Private Limited

2 शब्दरूप-प्रकरणम्

सभी सार्थक शब्द जो धातु, प्रत्यय व उपसर्ग न हों प्रातिपदिक होते हैं। इन्हें पद बनाने के लिए इनमें सुप् प्रत्यय लगाए जाते हैं। प्रातिपदिक शब्द निम्नलिखित दो प्रकार के होते हैं :

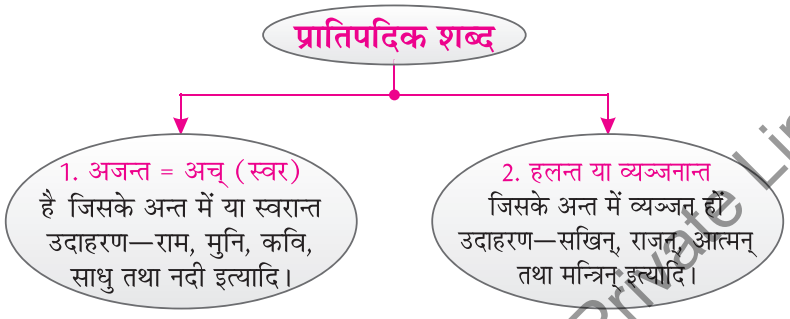

1. देव = देवता (अकारान्त पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	देव:	देवौ	देवा:
द्वितीया	देवम्	देवौ	देवान्
तृतीया	देवेन	देवाभ्याम्	देवै:
चतुर्थी	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्य:
पंचमी	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्य:
षष्ठी	देवस्य	देवयो:	देवानाम्
सप्तमी	देवे	देवयो:	देवेषु
संबोधन	हे देव!	हे देवौ!	हे देवा:!

अन्य अकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे—राम, बालक, बाल, खग, नर, छात्र, मेघ, चटक, मीन, अज, अश्व, काक, पिक, गज, सिंह, मयूर, रजक, अवकर, अध्यापक, ईश्वर, नृप, मास, महाराज, कलम तथा जय इत्यादि।

2. मुनि (इकारान्त पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनि:	मुनी	मुनय:
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्

©New Saraswati House (India) Private Limited

तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पंचमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
संबोधन	हे मुने!	हे मुनी!	हे मुनयः!

अन्य इकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–निधि (खजाना), कवि, गिरि (पहाड़), अग्नि (आग), कपि (बंदर), यति (संन्यासी), भूपति (राजा), हरि, रवि, आधि, व्याधि, रश्मि तथा अधिपति इत्यादि।

3. साधु = सज्जन (उकारान्त पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पंचमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
संबोधन	हे साधो!	हे साधू!	हे साधवः!

अन्य उकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–गुरु, भानु, रिपु, प्रभु, शिशु, ऋतु, पशु, वायु, विधु, रज्जु, तनु, हनु, सिन्धु, इन्दु, तरु तथा शम्भु इत्यादि।

4. पितृ = पिता (ऋकारान्त पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पंचमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

अन्य ऋकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–कर्तृ, भ्रातृ, सवितृ, धातृ, दातृ, जातृ तथा श्रोतृ इत्यादि।

© New Saraswati House (India) Private Limited

5. लता = टहनी (आकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पंचमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
संबोधन	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

अन्य आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–रमा, बाला, बालिका, शिखा, कक्षा, अध्यापिका, कृपा, शाखा, वर्षा, वरदा तथा आशा इत्यादि।

6. मति = बुद्धि (इकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै/मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पंचमी	मत्याः/मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः/मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्/मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते !	हे मती !	हे मतयः !

अन्य इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–रात्रि, श्रुति (वैदिक ज्ञान), शक्ति (बल), भक्ति, शान्ति, कृति (रचना), बुद्धि, रुचि, प्रकृति, कटि (कमर), आकृति, स्मृति, कीर्ति, कृषि, प्रीति, नीति, सृष्टि, दृष्टि, वृष्टि, गति, वृत्ति (आजीविका) तथा धृति इत्यादि।

7. नदी = सरिता (ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पंचमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि !	हे नद्यौ !	हे नद्यः !

© New Saraswati House (India) Private Limited

अन्य ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–जननी (माता), लक्ष्मी, रजनी, महिषी भैंस (मादा), विदुषी, भगिनी (बहन), पत्नी, राज्ञी (रानी), पृथ्वी, पौत्री (पोती), पुत्री, देवी, श्रीमती, कुमारी, मृगी, मयूरी, नारी तथा गौरी इत्यादि।

8. मातृ = माता (ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पंचमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

अन्य ऋकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–यातृ (देवरानी) तथा दुहितृ (पुत्री) इत्यादि।

9. फल (अकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पंचमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
संबोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

अन्य अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–पुस्तक, मित्र, पुष्प, ज्ञान, धन, नेत्र, नयन, उद्यान, नवनीत, चक्र, गृह, सत्य, हिम, स्वर्ग, पाप, पुण्य, गीत, नगर, गगन, भूषण, कमल, पत्र, चित्र, जल, भारत, वन, द्रव्य तथा भवन इत्यादि।

10. वारि = जल (इकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पंचमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि!/हे वारे!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

इसी तरह दधि (दही) तथा अस्थि (हड्डी) के रूप भी चलेंगे।

©New Saraswati House (India) Private Limited

11. मधु = शहद (उकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पंचमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधो!/हे मधु!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

मधु के ही समान अन्य उकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप चलेंगे; जैसे–दारु (लकड़ी), श्मश्रु (दाढ़ी), अश्रु (आँसू), वस्तु (चीज़), जानु (घुटना) तथा वसु (धन) इत्यादि।

सर्वनाम शब्द

12. अस्मद् = मैं, हम (दोनों लिंगों में समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम् (मा)	आवाम् (नौ)	अस्मान् (नः)
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम् (मे)	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मभ्यम् (नः)
पंचमी	मत्	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मत्
षष्ठी	मम (मे)	आवयोः (नौ)	अस्माकम् (नः)
सप्तमी	मयि	आवयोः (नौ)	अस्मासु

13. युष्मद् = तू, तुम (दोनों लिंगों में समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम् (त्वा)	युवाम्	युष्मान् (वः)
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम् (ते)	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम् (वः)
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव (ते)	युवयोः	युष्माकम् (वः)
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

© New Saraswati House (India) Private Limited

14. इदम् = यह (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पंचमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

इदम् = यह (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	आभ्यः
पंचमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

इदम् = यह (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पंचमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

15. तत् = वह (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

©New Saraswati House (India) Private Limited

तत् = वह (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तत् = वह (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

(शेष रूप पुंल्लिंग के समान होते हैं।)

16. किम् = कौन (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् = क्या (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

© New Saraswati House (India) Private Limited

किम् = क्या (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

(तृतीया विभक्ति के बाद शेष पुंल्लिग के समान हैं।)

17. यत् = जो (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पंचमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

यत् = जो (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	याभ्यः
पंचमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

यत् = जो (नपुंसकलिङ्ग)

प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

(शेष रूप पुंल्लिग के समान होंगे)

सर्वनाम शब्दों के संबोधन नहीं होते। संबोधन केवल संज्ञा तथा विशेषण आदि शब्दों के साथ आएँगे।

© New Saraswati House (India) Private Limited

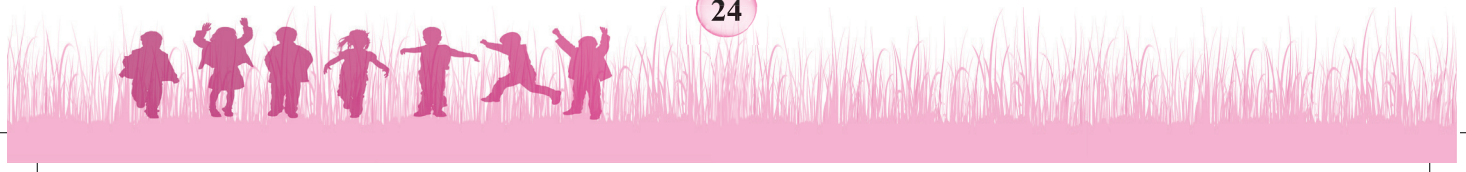

ध्यातव्यम्

- अंतिम अक्षर समान हो तो लिंगानुसार रूप प्रायः एक जैसे ही चलते हैं।
- अकारान्त नपुंसकलिंग के रूप प्रायः अकारान्त पुंल्लिग के समान ही चलते हैं। केवल प्रथमा, द्वितीया तथा संबोधन के रूप अलग होते हैं।
- तृतीया, चतुर्थी तथा पंचमी विभक्ति के द्विवचन के पद एक जैसे ही होते हैं। इसी तरह षष्ठी व सप्तमी विभक्ति के द्विवचन तथा अधिकतर प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति के द्विवचन भी एक जैसे ही होते हैं।
- यदि 'एक बालक का' यह वाक्य संस्कृत में बदलना हो तो 'का' के लिए षष्ठी विभक्ति के एकवचन का प्रयोग करेंगे जो 'बालकस्य' है। इसी तरह विभक्तियों के चिह्नों के अनुसार विभिन्न पदों के अर्थों को भी समझ सकते हैं।
- शब्द रूपों में केवल संधि के कारण ही कोई परिवर्तन हो सकता है, अन्यथा नहीं।
- रूपों को पहले विभक्ति के अनुसार, फिर वचनों के अनुसार भी याद करें।
- 'ऋ' 'र्' तथा 'ष्' के बाद यदि 'न' आ जाए तो उसे 'ण्' हो जाता है। पदान्त 'न्' को 'ण्' नहीं होता; यथा– रामान्, पितॄन्, रक्षन्, महर्षीन् इत्यादि।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. सर्वनाम शब्दों के संबोधन नहीं होते हैं।
2. तत्, एतत्, यत्, किम् आदि सर्वनाम शब्दों के रूप तीनों लिंगों में चलते हैं।
3. युष्मद् तथा अस्मद् के रूप दोनों लिंगों में समान होते हैं।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. यथानिर्दिष्टरूपाणि लिखत।

(निर्देशानुसार रूप लिखिए।)

1. देव – सप्तमी विभक्तिः ....
2. अध्यापक – चतुर्थी विभक्तिः ....
3. कवि – तृतीया विभक्तिः ....

© New Saraswati House (India) Private Limited

4. तरु – षष्ठी विभक्तिः ....

5. कर्तृ – प्रथमा विभक्तिः ....

6. अस्मद् – षष्ठी विभक्तिः ....

7. युष्मद् – पंचमी विभक्तिः ....

8. तत् – पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्तिः ....

9. इदम् – स्त्रीलिङ्ग, चतुर्थी विभक्तिः ....

10. एतत् – नपुंसकलिङ्ग, द्वितीया विभक्तिः ....

II. यथानिर्दिष्टरूपाणि लिखत।

(निर्देशानुसार रूप लिखिए।)

1. गज शब्द – षष्ठी विभक्ति, बहुवचने .....

2. गुरु शब्द – तृतीया विभक्ति, बहुवचने .....

3. मति शब्द – पञ्चमी विभक्ति, द्विवचने .....

4. नदी शब्द – सप्तमी विभक्ति, बहुवचने .....

5. पितृ शब्द – चतुर्थी विभक्ति, बहुवचने .....

6. मातृ शब्द – षष्ठी विभक्ति, द्विवचने .....

7. लता शब्द – संबोधन, एकवचने .....

8. गुरु शब्द – संबोधन, एकवचने .....

9. शाखा शब्द – द्वितीया विभक्ति, द्विवचने .....

10. कन्या शब्द – पञ्चमी विभक्ति, बहुवचने .....

III. रिक्तस्थानानि पूरयत।

(रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

1. रमायाम्	रमयोः	.....	6. मातुः	.....	मातृणाम्
2. हे	हे लते!	हे लताः!	7. नद्या	नदीभ्याम्	.....
3. पत्रेण	.....	पत्रैः	8.	साधुभ्याम्	साधुभिः
4.	रमाभ्याम्	रमाभिः	9. जनकस्य	जनकयोः	.....
5. कृपया	कृपाभ्याम्	.....	10. हरिम्	हरी	.....

© New Saraswati House (India) Private Limited

3 धातुरूप-प्रकरणम्

जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं। क्रिया का मूल रूप ही धातु होता है। प्रत्येक शब्द किसी न किसी धातु में प्रत्यय लगकर ही बनता है। धातुओं में तिङ् प्रत्यय लगाकर क्रियापद बनाए जाते हैं। ये निम्नलिखित दो प्रकार के होते हैं :

(1) परस्मैपद (2) आत्मनेपद।

कुछ धातुओं के रूप दोनों पदों में चलते हैं। ऐसी धातुएँ उभयपदी कहलाती हैं।

संस्कृत की सभी धातुओं को दस गणों में बाँटा गया है। प्रत्येक गण की धातुओं के रूप प्रायः एक तरह से ही चलते हैं। कुछ प्रमुख धातुओं के रूप इस प्रकार हैं–

1. परस्मैपद

1. √पठ् (पढ़ना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लङ् लकार (भूतकाल)

प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए/संभावना)

प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

दस गण	
1	भ्वादिगण = √भू इत्यादि
2	अदादिगण = √अद् आदि
3	जुहोत्यादिगण = √हु आदि
4	दिवादिगण = √दिव् आदि
5	स्वादिगण = √सु आदि
6	तुदादिगण = √तुद् आदि
7	रुधादिगण = √रुध् आदि
8	तनादिगण = √तन् आदि
9	क्रयादिगण = √क्री आदि
10	चुरादिगण = √चुर् आदि

© New Saraswati House (India) Private Limited

2. √गम् / गच्छ् (जाना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

3. √नम् (नमस्कार करना या झुकना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नमति	नमतः	नमन्ति
मध्यम पुरुष	नमसि	नमथः	नमथ
उत्तम पुरुष	नमामि	नमावः	नमामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
मध्यम पुरुष	अनमः	अनमतम्	अनमत
उत्तम पुरुष	अनमम्	अनमाव	अनमाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
मध्यम पुरुष	नंस्यसि	नंस्यथः	नंस्यथ
उत्तम पुरुष	नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः

© New Saraswati House (India) Private Limited

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	नमतु	नमताम्	नमन्तु
मध्यम पुरुष	नम	नमतम्	नमत
उत्तम पुरुष	नमानि	नमाव	नमाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
मध्यम पुरुष	नमेः	नमेतम्	नमेत
उत्तम पुरुष	नमेयम्	नमेव	नमेम

4. चल् (चलना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलति	चलतः	चलन्ति
मध्यम पुरुष	चलसि	चलथः	चलथ
उत्तम पुरुष	चलामि	चलावः	चलामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अचलत्	अचलताम्	अचलन्
मध्यम पुरुष	अचलः	अचलतम्	अचलत
उत्तम पुरुष	अचलम्	अचलाव	अचलाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	चलिष्यति	चलिष्यतः	चलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चलिष्यसि	चलिष्यथः	चलिष्यथ
उत्तम पुरुष	चलिष्यामि	चलिष्यावः	चलिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	चलतु	चलताम्	चलन्तु
मध्यम पुरुष	चल	चलतम्	चलत
उत्तम पुरुष	चलानि	चलाव	चलाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	चलेत्	चलेताम्	चलेयुः
मध्यम पुरुष	चलेः	चलेतम्	चलेत
उत्तम पुरुष	चलेयम्	चलेव	चलेम

5. √खाद् (खाना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादति	खादतः	खादन्ति
मध्यम पुरुष	खादसि	खादथः	खादथ
उत्तम पुरुष	खादामि	खादावः	खादामः

© New Saraswati House (India) Private Limited

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अखादत्	अखादताम्	अखादन्
मध्यम पुरुष	अखादः	अखादतम्	अखादत
उत्तम पुरुष	अखादम्	अखादाव	अखादाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	खादिष्यति	खादिष्यतः	खादिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	खादिष्यसि	खादिष्यथः	खादिष्यथ
उत्तम पुरुष	खादिष्यामि	खादिष्यावः	खादिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	खादतु	खादताम्	खादन्तु
मध्यम पुरुष	खाद	खादतम्	खादत
उत्तम पुरुष	खादानि	खादाव	खादाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	खादेत्	खादेताम्	खादेयुः
मध्यम पुरुष	खादेः	खादेतम्	खादेत
उत्तम पुरुष	खादेयम्	खादेव	खादेम

6. √दृश् / पश्य (देखना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

© New Saraswati House (India) Private Limited

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यम पुरुष	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

7. √जि (जीतना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जयति	जयतः	जयन्ति
मध्यम पुरुष	जयसि	जयथः	जयथ
उत्तम पुरुष	जयामि	जयावः	जयामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
मध्यम पुरुष	अजयः	अजयतम्	अजयत
उत्तम पुरुष	अजयम्	अजयाव	अजयाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	जेष्यसि	जेष्यथः	जेष्यथ
उत्तम पुरुष	जेष्यामि	जेष्यावः	जेष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	जयतु	जयताम्	जयन्तु
मध्यम पुरुष	जय	जयतम्	जयत
उत्तम पुरुष	जयानि	जयाव	जयाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
मध्यम पुरुष	जयेः	जयेतम्	जयेत
उत्तम पुरुष	जयेयम्	जयेव	जयेम

8. √अस् (होना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः	स्मः

© New Saraswati House (India) Private Limited

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	स्यात्	स्यातम्	स्युः
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

9. √भू (होना)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

© New Saraswati House (India) Private Limited

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

10. √पा / पिब् (पीना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

11. √हन् (मारना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
मध्यम पुरुष	हन्सि	हथः	हथ
उत्तम पुरुष	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
मध्यम पुरुष	अहनः	अहतम्	अहत
उत्तम पुरुष	अहनम्	अहन्व	अहन्म

© New Saraswati House (India) Private Limited

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उत्तम पुरुष	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
मध्यम पुरुष	जहि	हतम्	हत
उत्तम पुरुष	हनानि	हनाव	हनाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
मध्यम पुरुष	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उत्तम पुरुष	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

12. √घ्रा / जिघ्र् (सूँघना)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	जिघ्रति	जिघ्रतः	जिघ्रन्ति
मध्यम पुरुष	जिघ्रसि	जिघ्रथः	जिघ्रथ
उत्तम पुरुष	जिघ्रामि	जिघ्रावः	जिघ्रामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अजिघ्रत्	अजिघ्रताम्	अजिघ्रन्
मध्यम पुरुष	अजिघ्रः	अजिघ्रतम्	अजिघ्रत
उत्तम पुरुष	अजिघ्रम्	अजिघ्राव	अजिघ्राम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	घ्रास्यति	घ्रास्यतः	घ्रास्यन्ति
मध्यम पुरुष	घ्रास्यसि	घ्रास्यथः	घ्रास्यथ
उत्तम पुरुष	घ्रास्यामि	घ्रास्यावः	घ्रास्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	जिघ्रतु	जिघ्रताम्	जिघ्रन्तु
मध्यम पुरुष	जिघ्र	जिघ्रतम्	जिघ्रत
उत्तम पुरुष	जिघ्राणि	जिघ्राव	जिघ्राम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	जिघ्रेत्	जिघ्रेताम्	जिघ्रेयुः
मध्यम पुरुष	जिघ्रेः	जिघ्रेतम्	जिघ्रेत
उत्तम पुरुष	जिघ्रेयम्	जिघ्रेव	जिघ्रेम

© New Saraswati House (India) Private Limited

13. √पत् (गिरना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतति	पतत:	पतन्ति
मध्यम पुरुष	पतसि	पतथ:	पतथ
उत्तम पुरुष	पतामि	पताव:	पताम:

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अपतत्	अपताम्	अपतन्
मध्यम पुरुष	अपत:	अपततम्	अपतत
उत्तम पुरुष	अपतम्	अपताव	अपताम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	पतिष्यति	पतिष्यत:	पतिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पतिष्यसि	पतिष्यथ:	पतिष्यथ
उत्तम पुरुष	पतिष्यामि	पतिष्याव:	पतिष्याम:

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	पततु	पताम्	पतन्तु
मध्यम पुरुष	पत	पततम्	पतत
उत्तम पुरुष	पतानि	पताव	पताम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पतेत्	पतेताम्	पतेयु:
मध्यम पुरुष	पते:	पतेतम्	पतेत
उत्तम पुरुष	पतेयम्	पतेव	पतेम

14. √स्मृ (याद करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्मरति	स्मरत:	स्मरन्ति
मध्यम पुरुष	स्मरसि	स्मरथ:	स्मरथ
उत्तम पुरुष	स्मरामि	स्मराव:	स्मराम:

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
मध्यम पुरुष	अस्मर:	अस्मरतम्	अस्मरत
उत्तम पुरुष	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम

© New Saraswati House (India) Private Limited

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ
उत्तम पुरुष	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु
मध्यम पुरुष	स्मर	स्मरतम्	स्मरत
उत्तम पुरुष	स्मराणि	स्मराव	स्मराम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
मध्यम पुरुष	स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत
उत्तम पुरुष	स्मरेयम्	स्मरेयाव	स्मरेयाम

15. √ हस् (हँसना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसति	हसतः	हसन्ति
मध्यम पुरुष	हससि	हसथः	हसथ
उत्तम पुरुष	हसामि	हसावः	हसामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
मध्यम पुरुष	अहसः	अहसतम्	अहसत
उत्तम पुरुष	अहसम्	अहसाव	अहसाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ
उत्तम पुरुष	हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	हसतु	हसताम्	हसन्तु
मध्यम पुरुष	हस	हसतम्	हसत
उत्तम पुरुष	हसानि	हसाव	हसाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	हसेत्	हसेताम्	हसेयुः
मध्यम पुरुष	हसेः	हसेतम्	हसेत
उत्तम पुरुष	हसेयम्	हसेव	हसेम

© New Saraswati House (India) Private Limited

16. √रक्ष् (रक्षा करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति
मध्यम पुरुष	रक्षसि	रक्षथः	रक्षथ
उत्तम पुरुष	रक्षामि	रक्षावः	रक्षामः

लङ् लकार (भूतकाल)

प्रथम पुरुष	अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्
मध्यम पुरुष	अरक्षः	अरक्षतम्	अरक्षत
उत्तम पुरुष	अरक्षम्	अरक्षाव	अरक्षाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्रथम पुरुष	रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	रक्षिष्यसि	रक्षिष्यथः	रक्षिष्यथ
उत्तम पुरुष	रक्षिष्यामि	रक्षिष्यावः	रक्षिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

प्रथम पुरुष	रक्षतु	रक्षताम्	रक्षन्तु
मध्यम पुरुष	रक्ष	रक्षतम्	रक्षत
उत्तम पुरुष	रक्षाणि	रक्षाव	रक्षाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए/संभावना)

प्रथम पुरुष	रक्षेत्	रक्षेताम्	रक्षेयुः
मध्यम पुरुष	रक्षेः	रक्षेतम्	रक्षेत
उत्तम पुरुष	रक्षेयम्	रक्षेव	रक्षेम

17. √पच् (पकाना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचति	पचतः	पचन्ति
मध्यम पुरुष	पचसि	पचथः	पचथ
उत्तम पुरुष	पचामि	पचावः	पचामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम पुरुष	अपचः	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुष	अपचम्	अपचाव	अपचाम

© New Saraswati House (India) Private Limited

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	पचतु	पचताम्	पचन्तु
मध्यम पुरुष	पच	पचतम्	पचत
उत्तम पुरुष	पचानि	पचाव	पचाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
मध्यम पुरुष	पचेः	पचेतम्	पचेत
उत्तम पुरुष	पचेयम्	पचेव	पचेम

18. √स्था / तिष्ठ् (ठहरना/रुकना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यम पुरुष	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम पुरुष	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तम पुरुष	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यम पुरुष	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम पुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
मध्यम पुरुष	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तम पुरुष	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

© New Saraswati House (India) Private Limited

19. √क्रुध् (गुस्सा करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रुध्यति	क्रुध्यतः	क्रुध्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्रुध्यसि	क्रुध्यथः	क्रुध्यथ
उत्तम पुरुष	क्रुध्यामि	क्रुध्यावः	क्रुध्यामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अक्रुध्यत्	अक्रुध्यताम्	अक्रुध्यन्
मध्यम पुरुष	अक्रुध्यः	अक्रुध्यतम्	अक्रुध्यत
उत्तम पुरुष	अक्रुध्यम्	अक्रुध्याव	अक्रुध्याम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	क्रोत्स्यति	क्रोत्स्यतः	क्रोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्रोत्स्यसि	क्रोत्स्यथः	क्रोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	क्रोत्स्यामि	क्रोत्स्यावः	क्रोत्स्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	क्रुध्यतु	क्रुध्यताम्	क्रुध्यन्तु
मध्यम पुरुष	क्रुध्य	क्रुध्यतम्	क्रुध्यत
उत्तम पुरुष	क्रुध्यानि	क्रुध्याव	क्रुध्याम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	क्रुध्येत्	क्रुध्येताम्	क्रुध्येयुः
मध्यम पुरुष	क्रुध्येः	क्रुध्येतम्	क्रुध्येत
उत्तम पुरुष	क्रुध्येयम्	क्रुध्येव	क्रुध्येम

20. √श्रु (सुनना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
मध्यम पुरुष	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उत्तम पुरुष	शृणोमि	शृणुवः/शृण्वः	शृणुमः/शृण्मः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
मध्यम पुरुष	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उत्तम पुरुष	अशृण्वम्	अशृणुव/अशृण्व	अशृणुम/अशृण्म

© New Saraswati House (India) Private Limited

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उत्तम पुरुष	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु
मध्यम पुरुष	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
उत्तम पुरुष	शृण्वानि	शृण्वाव	शृण्वाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
मध्यम पुरुष	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उत्तम पुरुष	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

21. √वद् (बोलना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वदति	वदतः	वदन्ति
मध्यम पुरुष	वदसि	वदथः	वदथ
उत्तम पुरुष	वदामि	वदावः	वदामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
मध्यम पुरुष	अवदः	अवदतम्	अवदत
उत्तम पुरुष	अवदम्	अवदाव	अवदाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ
उत्तम पुरुष	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	वदतु	वदताम्	वदन्तु
मध्यम पुरुष	वद	वदतम्	वदत
उत्तम पुरुष	वदानि	वदाव	वदाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
मध्यम पुरुष	वदेः	वदेतम्	वदेत
उत्तम पुरुष	वदेयम्	वदेव	वदेम

© New Saraswati House (India) Private Limited

22. √इष् / इच्छ् (इच्छा करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
मध्यम पुरुष	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उत्तम पुरुष	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यम पुरुष	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उत्तम पुरुष	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उत्तम पुरुष	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यम पुरुष	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उत्तम पुरुष	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
मध्यम पुरुष	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उत्तम पुरुष	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

23. √आप् (पाना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
उत्तम पुरुष	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
मध्यम पुरुष	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

© New Saraswati House (India) Private Limited

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
उत्तम पुरुष	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
मध्यम पुरुष	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उत्तम पुरुष	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

24. √लिख् (लिखना)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
मध्यम पुरुष	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उत्तम पुरुष	लिखामि	लिखावः	लिखामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
मध्यम पुरुष	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
उत्तम पुरुष	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ
उत्तम पुरुष	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
मध्यम पुरुष	लिख	लिखतम्	लिखत
उत्तम पुरुष	लिखानि	लिखाव	लिखाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
मध्यम पुरुष	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत
उत्तम पुरुष	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

© New Saraswati House (India) Private Limited

25. √प्रच्छ् (पूछना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
मध्यम पुरुष	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उत्तम पुरुष	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यम पुरुष	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम पुरुष	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम पुरुष	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम पुरुष	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
मध्यम पुरुष	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तम पुरुष	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

26. √कृ (करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

© New Saraswati House (India) Private Limited

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम पुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

2. आत्मनेपद

1. √कृ (करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
मध्यम पुरुष	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उत्तम पुरुष	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
मध्यम पुरुष	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उत्तम पुरुष	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
मध्यम पुरुष	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उत्तम पुरुष	करवै	करवावहै	करवामहै

© New Saraswati House (India) Private Limited

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
मध्यम पुरुष	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उत्तम पुरुष	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

2. √सेव् (सेवा करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुष	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुष	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुष	असेवथाः	असेवेथाम्	असेध्वम्
उत्तम पुरुष	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पुरुष	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पुरुष	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

3. √मुद् (प्रसन्न होना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मोदते	मोदेते	मोदन्ते
मध्यम पुरुष	मोदसे	मोदेथे	मोदध्वे
उत्तम पुरुष	मोदे	मोदावहे	मोदामहे

© New Saraswati House (India) Private Limited

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त
मध्यम पुरुष	अमोदथाः	अमोदेथाम्	अमोदध्वम्
उत्तम पुरुष	अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	मोदिष्यसे	मोदिष्येथे	मोदिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	मोदिष्ये	मोदिष्यावहे	मोदिष्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्
मध्यम पुरुष	मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्
उत्तम पुरुष	मोदै	मोदावहै	मोदामहै

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्
मध्यम पुरुष	मोदेथाः	मोदेयाथाम्	मोदेध्वम्
उत्तम पुरुष	मोदेय	मोदेवहि	मोदेमहि

4. √चुर् (चुराना)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
मध्यम पुरुष	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उत्तम पुरुष	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
मध्यम पुरुष	अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उत्तम पुरुष	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
मध्यम पुरुष	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
उत्तम पुरुष	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै

© New Saraswati House (India) Private Limited

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयेत	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
मध्यम पुरुष	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
उत्तम पुरुष	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि

5. √लभ् (प्राप्त करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुष	लभे	लभावहे	लभामहे

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुष	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

6. √वृत् (होना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
मध्यम पुरुष	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
उत्तम पुरुष	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे

© New Saraswati House (India) Private Limited

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
मध्यम पुरुष	अवर्तथाः	अवर्तेथाम्	अवर्तध्वम्
उत्तम पुरुष	अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	वर्तिष्यसे	वर्तिष्येथे	वर्तिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
मध्यम पुरुष	वर्तस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
मध्यम पुरुष	वर्तेथाः	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि

7. √याच् (माँगना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	याचते	याचेते	याचन्ते
मध्यम पुरुष	याचसे	याचेथे	याचध्वे
उत्तम पुरुष	याचे	याचावहे	याचामहे

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
मध्यम पुरुष	अयाचथाः	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
उत्तम पुरुष	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
मध्यम पुरुष	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
उत्तम पुरुष	याचै	याचावहै	याचामहै

© New Saraswati House (India) Private Limited

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
मध्यम पुरुष	याचेथा:	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
उत्तम पुरुष	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

8. √हृ (हरना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हरते	हरेते	हरन्ते
मध्यम पुरुष	हरसे	हरेथे	हरध्वे
उत्तम पुरुष	हरे	हरावहे	हरामहे

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अहरत	अहरेताम्	अहरन्त
मध्यम पुरुष	अहरथा:	अहरेथाम्	अहरध्वम्
उत्तम पुरुष	अहरे	अहरावहि	अहरामहि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	हरिष्यते	हरिष्येते	हरिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	हरिष्यसे	हरिष्येथे	हरिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	हरिष्ये	हरिष्यावहे	हरिष्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
मध्यम पुरुष	हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्
उत्तम पुरुष	हरै	हरावहै	हरामहै

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्
मध्यम पुरुष	हरेथा:	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
उत्तम पुरुष	हरेय	हरेवहि	हरेमहि

© New Saraswati House (India) Private Limited

ध्यातव्यम्

- एक धातु के अनेकार्थ हो सकते हैं; यथा–√नम् इत्यादि।
- एक ही अर्थ के लिए भी अनेक धातु हो सकते हैं; यथा–खेलना के लिए √क्रीड्, √खेल् इत्यादि।
- कुछ धातुओं में प्रत्यय के साथ जुड़ने से पहले 'इ' का आगम हो जाता है।
- लट् लकार में एकवचन के तीनों धातु रूपों में ह्रस्व स्वर 'इ' की मात्रा लगती है।
- धातुओं के रूप **दस** लकारों में चलते हैं, जिनमें से प्रमुख **पाँच** ही पाठ्यक्रम में होते हैं।
- सभी धातु रूपों का प्रयोग तीनों लिंगों में समान रूप से किया जाता है।
- प्रथम पुरुष के साथ अन्य पुरुष, मध्यम पुरुष के साथ श्रोता तथा उत्तम पुरुष के साथ वक्ता का प्रयोग किया जाता है।
- एकवचन के कर्ता के साथ एकवचन, द्विवचन के कर्ता के साथ द्विवचन तथा बहुवचन के कर्ता के साथ बहुवचन के क्रियापद का ही प्रयोग किया जा सकता है।
- संस्कृत के सभी शब्द किसी-न-किसी धातु से ही बने हैं। अतएव प्रत्येक शब्द में भी कोई न कोई मूल धातु होती है; यथा–संस्कृत शब्द में 'कृ' धातु है।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।
2. मूल धातु में प्रत्यय जुड़ने पर ही क्रिया रूप बनते हैं।
3. संस्कृत की सभी धातुओं को दस गणों में विभाजित किया गया है।
4. प्रत्येक गण के सभी रूपों में विशेष समानता होती है।
5. धातुओं के रूप दो पदों में चलते हैं–परस्मैपद और आत्मनेपद। कुछ धातुएँ उभयपदी भी होती हैं।
6. लट् लकार का प्रयोग वर्तमान काल के लिए किया जाता है।
7. लृट् लकार का प्रयोग भविष्यत् काल के लिए तथा लङ् लकार का प्रयोग भूतकाल के लिए किया जाता है।

© New Saraswati House (India) Private Limited

प्रायोगिकाभ्यासः

I. यथानिर्देशं लकारपरिवर्तनं कुरुत।

(निर्देशानुसार लकार-परिवर्तन कर धातुओं के रूप लिखिए।)

1. कुरु (लृट्लकारे) .....
2. नमेत् (लृट्लकारे) .....
3. द्रक्ष्यथ (लोट्लकारे) .....
4. पचति (विधिलिङ्लकारे) .....
5. पठिष्यामः (लङ्लकारे) .....
6. स्मरामि (लोट्लकारे) .....
7. पश्यति (लृट्लकारे) .....
8. अगच्छम् (लट्लकारे) .....
9. गास्यामः (लोट्लकारे) .....
10. पचसि (लृट्लकारे) .....

II. यथानिर्दिष्टरूपाणि लिखत।

(निर्देशानुसार रूप लिखिए।)

1. √चल्, लोट्लकारे, प्रथम पुरुष, द्विवचन .....
2. √नम्, लृट्लकारे, उत्तम पुरुष, बहुवचन .....
3. √खाद्, लट्लकारे, मध्यम पुरुष, एकवचन .....
4. √पठ्, लङ्लकारे, उत्तम पुरुष, बहुवचन .....
5. √पा, विधिलिङ्लकारे, मध्यम पुरुष, द्विवचन .....
6. √अस्, लोट्लकारे, प्रथम पुरुष, एकवचन .....
7. √दृश्, लट्लकारे, उत्तम पुरुष, द्विवचन .....
8. √अस्, लोट्लकारे, प्रथम पुरुष, बहुवचन .....
9. √भू, विधिलिङ्लकारे, मध्यम पुरुष, एकवचन .....
10. √धाव्, लृट्लकारे, प्रथम पुरुष, द्विवचन .....
11. √गम्, लोटलकारे, उत्तम पुरुष, एकवचन .....
12. √क्रीड्, लङ्लकारे, प्रथम पुरुष, बहुवचन .....

III. समुचितधातुरूपेण रिक्तस्थानानि पूरयन्तु।

(उचित धातु रूप से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

1. करोतु	(*i*)	कुर्वन्तु	2. (*iv*)	स्याताम्	स्युः
(*ii*)	कुरुतम्	कुरुत	स्याः	स्यातम्	(*v*) .....
करवाणि	(*iii*)	करवाम	स्याम्	(*vi*)	स्याम
3. (*vii*)	सेवेते	सेवन्ते	4. (*x*)	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
सेवसे	सेवेथे	(*viii*)	लप्स्यसे	(*xi*)	लप्स्यध्वे
(*ix*)	सेवावहे	सेवामहे	लप्स्ये	लप्स्यावहे	(*xii*) .....
5. खादेत्	(*xiii*)	खादेयुः	6. अजयत्	अजयताम्	(*xiv*) .....
(*xiv*)	खादेतम्	खादेत	(*xvii*)	अजयतम्	अजयत्
खादेयम्	खादेव	(*xv*)	अजयम्	(*xviii*)	अजयाम

© New Saraswati House (India) Private Limited

4 सन्धिः

दो या दो से अधिक वर्णों के पास-पास आने पर यदि उनमें कोई परिवर्तन हो जाए तो उसे संधि कहते हैं।
संधि करना या न करना वक्ता या लेखक की विवक्षा (इच्छा) पर निर्भर करता है। संधि तीन प्रकार की होती है:

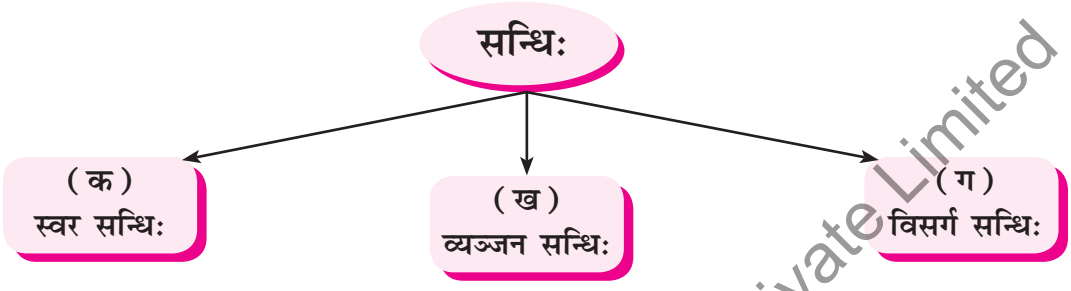

स्वर सन्धिः

स्वर के साथ स्वर का मेल होने पर नया स्वर बने तो उसे स्वर संधि कहते हैं। स्वर संधि आठ प्रकार की होती है।

1. **दीर्घ सन्धिः**—यदि पूर्व पद का अंतिम वर्ण अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ हो तथा उत्तर पद का पहला वर्ण भी उसी जाति का हो तो दोनों के स्थान पर उसी स्वर का दीर्घ हो जाता है। इसे हम निम्नलिखित उदाहरणों से समझ सकते हैं—

➲ अ + अ → आ : सूर्य + अस्तः = सूर्यास्तः

आ + आ → आ : महा + आशयः = महाशयः

अ + आ → आ : हिम + आलयः = हिमालयः

आ + अ → आ : कदा + अपि = कदापि

ठीक इसी तरह—

➲ इ + इ → ई : हरि + इच्छा = हरीच्छा

ई + ई → ई : रजनी + ईशः = रजनीशः

इ + ई → ई : मुनि + ईशः = मुनीशः

ई + इ → ई : शची + इन्द्रः = शचीन्द्रः

© New Saraswati House (India) Private Limited

➲ उ + उ → ऊ : भानु + उदयः = भानूदयः

ऊ + ऊ → ऊ : भू + ऊर्ध्वम् = भूर्ध्वम्

उ + ऊ → ऊ : लघु + ऊर्मिः = लघूर्मि

ऊ + उ → ऊ : वधू + उक्तिः = वधूक्तिः

ऋ के बाद सजातीय ऋ आने पर विकल्प (इच्छा) से ॠ होता है तथा ऋ के बाद ऌ आने पर भी विकल्प से ॠ होता है।

➲ ऋ + ऋ → ॠ : पितृ + ऋणम् = पितॄणम्

ऋ + ऌ → ॠ : होतृ + ऌकारः = होतॄकारः

ऋ + ऌ → ऌ : होतृ + ऌकारः = होत्ऌकारः

ऋ + ऌ → ऌ : होतृ + ऌकारः = होतृऌकारः

अपवाद–कुछ स्थानों पर संधि का नियम लागू होने पर भी संधि नहीं होने का विधान होता है। वे उस संधि के अपवाद होते हैं; यथा–सार + अङ्गः = सारङ्गः इत्यादि।

2. गुण सन्धिः–यदि पूर्व पद के अंत में अ, आ हो तथा उत्तर पद के पहले अक्षर इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ऌ हों तो उन्हें क्रम से ए, ओ, अर् तथा अल् हो जाता है।

➲ अ + इ → ए : गज + इन्द्रः = गजेन्द्रः

अ + ई → ए : धन + ईशः = धनेशः

आ + इ → ए : राधा + इच्छा = राधेच्छा

आ + ई → ए : महा + ईश्वरः = महेश्वरः

➲ अ + उ → ओ : भाग्य + उदयः = भाग्योदयः

आ + ऊ → ओ : दया + ऊर्मिः = दयोर्मि

अ + ऊ → ओ : सुयोधन + ऊर्मिः = सुयोधनोर्मिः

आ + उ → ओ : गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्

➲ अ + ऋ → अर् : देव + ऋषिः = देवर्षिः

आ + ऋ → अर् : राजा + ऋषिः = राजर्षिः

अ + ऌ → अल् : मम + ऌकारः = ममल्ऌकारः

आ + ऌ → अल् : रमा + ऌकारः = रमल्कारः

© New Saraswati House (India) Private Limited

3. वृद्धि सन्धि:–यदि पूर्व पद के अंत में **अ** या **आ** तथा उत्तर पद का पूर्व वर्ण **ए** या **ऐ** हो तो उन के स्थान पर **ऐ** तथा ओ, औ के स्थान पर **औ** हो जाता है। साथ ही उत्तर पद का पहला वर्ण **ऋ** हो तो **आर्** हो जाता है।

नोट–आर् होने का कारण गुण सन्धि नहीं है, यह गुण सन्धि का अपवाद है।

➲ अ + ए → ऐ
सह + एव = सहैव

आ + ऐ → ऐ
कृष्णा + ऐक्यम् = कृष्णैक्यम्

अ + ऐ → ऐ
तव + ऐश्वर्यम् = तवैश्वर्यम्

आ + ए → ऐ
प्रार्थना + एषा = प्रार्थनैषा

➲ अ + ओ → औ
जल + ओघ: = जलौघ:

अ + औ → औ
रूप + औदार्यम् = रूपौदार्यम्

आ + औ → औ
विद्या + औत्सुक्यम् = विद्यौत्सुक्यम्

आ + ओ → औ
एषा + ओषधि: = एषौषधि:

अ + ऋ → आर्
प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति

4. यण् सन्धि:–यदि पूर्व पद का अन्तिम वर्ण इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ अथवा ऌ हो तथा उत्तर पद का प्रथमाक्षर कोई भी भिन्न (विजातीय) स्वर हो तो इ, ई को य्, उ, ऊ को व्, ऋ, ॠ को र् तथा ऌ को ल् हो जाता है।

➲ इ + भिन्न स्वर → य्
रवि + अपि = रव्यपि

ई + भिन्न स्वर → य्
देवी + उवाच = देव्युवाच

उ + भिन्न स्वर → व्
साधु + इति = साध्विति

ऊ + भिन्न स्वर → व्
वधू + आज्ञा = वध्वाज्ञा

➲ ऋ + भिन्न स्वर → र्
भ्रात + आदेश: = भ्रातर् + आदेश: = भ्रात्रादेश:

ऌ + भिन्न स्वर → ल्
ऌ + आकृति: = ल् + आकृति = लाकृति:

© New Saraswati House (India) Private Limited

5. **अयादि सन्धि:**—ए, ऐ, ओ, औ यदि पूर्व पद के अन्त में हों तथा उत्तर पद का प्रथम अक्षर कोई भी स्वर हो तो ए को अय्, ऐ को आय्, ओ को अव्, औ को आव् हो जाता है।

➲ ए + अ ऐ + अ ओ + अ औ + उ

अय् आय् अव् आव्

चे + अनम् गै + अक: भो + अनम् भौ + उक:

= चयनम = गायक: = भवनम् = भावुक:

6. **पूर्वरूप सन्धि:**—यदि पूर्व पद का अंतिम अक्षर ए या ओ हो और उत्तर पद का प्रथम अक्षर अ (केवल ह्रस्व) हो तो **अयादि सन्धि** न होकर पूर्वरूप सन्धि का नियम लागू होगा तथा अ पूर्व पद ए या ओ में बिना परिवर्तन मिल जाएगा तथा पहचान के लिए अवग्रह चिह्न (ऽ) लगा दिया जाता है।

➲ ओ + अ

को + अपि

= कोऽपि

ए + अ

धर्मे + अस्मिन्

= धर्मेऽस्मिन्

7. **पररूप सन्धि:**—पहले पद के अंत में यदि अकारान्त उपसर्ग हो तथा बाद में ए, ओ से शुरू होने वाली धातु हो तो दोनों के स्थान पर क्रम से ए, ओ ही हो जाता है।

➲ अ + ए अ + ओ

ए ओ

प्र + एषणम् उप + ओषति

= प्रेषणम् = उपोषति

8. **प्रकृति भाव/प्रगृह्य संज्ञा**—संधि के नियम लागू होने पर भी जब संधि न करके उसे उसी रूप में रखने का विधान हो तो उसे प्रकृति भाव कहते हैं।

➲ एक स्वर वाले अव्ययों की प्रगृह्य संज्ञा होती है।

इ + इन्द्र: उ + उमेश:

= इ इन्द्र: = उ उमेश:

➲ द्विवचन के अंत में ई, ऊ तथा ए हों तो उनकी सभी स्थानों पर (शब्दों तथा धातुओं के आने पर भी) प्रगृह्य संज्ञा होती है।

शाखे + एते

= शाखे एते

विष्णू + इमौ

= विष्णू इमौ

कवी + एतौ

= कवी एतौ

हरी + एतौ

= हरी एतौ

सेवेते + इमौ

= सेवेते इमौ

गिरी + इमौ

= गिरी इमौ

© New Saraswati House (India) Private Limited

➲ संबोधन के ओ की तथा दूर से पुकारने पर जब अंतिम स्वर प्लुत हो जाता है तो उसकी प्रगृह्य संज्ञा होती है। इसमें दोनों रूप मान्य होते हैं।

शम्भो + आयाहि (ओ की विकल्प से) = शम्भो आयाहि/शम्भ आयाहि

कृष्ण ३ + अत्र = कृष्ण ३ अत्र

➲ अदस् (यह) शब्द के रूपों के अमी तथा अमू पदों की प्रगृह्य संज्ञा होने से प्रकृति भाव रह जाता है।

अमू + आगच्छत: = अमू आगच्छत:

अमी + ईशा: = अमी ईशा:

व्यञ्जन सन्धि:

व्यंजन के साथ व्यंजन अथवा स्वर का मेल होने पर परिवर्तन व्यंजन में हो तो उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

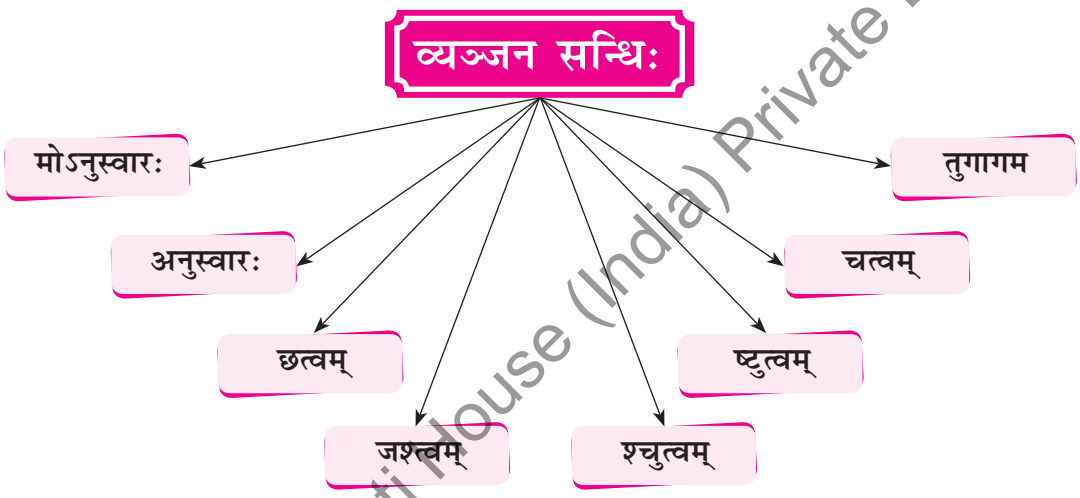

1. **मोऽनुस्वार:**—पद के अंत में हलन्त म् के बाद किसी भी व्यंजन के आगे आने पर म् को अनुस्वार हो जाता है; जैसे—

देवम् + यच्छति = देवं यच्छति

ग्रामम् + गच्छति = ग्रामं गच्छति

ध्यान रखें कि वाक्य के यदि अकेले पद या अंतिम पद के अंत में म् हो तब अंतिम मकार को अनुस्वार नहीं हो सकता; जैसे—लतां। यह अशुद्ध है इसके बाद व्यंजन पद आना जरूरी है जो यहाँ नहीं है।

2. **अनुस्वार: (परसवर्ण:)**—अपदान्त अनुस्वार के बाद किसी वर्ग का कोई भी व्यंजन आए तो अनुस्वार को उसी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर हो जाता है; जैसे—

गम्	+	गा	=	गङ्गा	अम्	+	का:	=	अङ्का:
शाम्	+	त:	=	शान्त:	कम्	+	टक:	=	कण्टक:
अम्	+	ग:	=	अङ्ग:	सिम्	+	धु:	=	सिन्धु:
सम्	+	धि:	=	सन्धि:	सम्	+	धानम्	=	सन्धानम्
दम्	+	ड:	=	दण्ड:	शम्	+	का:	=	शङ्का:

© New Saraswati House (India) Private Limited

3. छत्वम् (श्चुत्व सन्धि का प्रकार) (*i*) तवर्ग को चवर्ग, श् को छ्–किसी भी वर्ग का पहला, दूसरा, तीसरा या चौथा वर्ण पद के अंत में हो तथा फिर श् के बाद कोई स्वर या य्, र्, व्, ह् वर्ण हो तो श् को छ् तथा तवर्ग को चवर्ग हो जाता है।

एतत् (वर्ग का प्रथमाक्षर है) + श्रुत्वा
↓ + श् + र् उत्वा (श् के बाद र् वर्ण है) अतः
↓ विकल्प से (मर्जी से)
= च् छ्
= एत च् छ् + र् उत्वा
= एतच्छुत्वा
= एतच्श्रुत्वा (भी विकल्प से परिवर्तन है, चाहें तो करें न चाहें तो न करें। दोनों रूप बनेंगे।)

तत् (वर्ग का प्रथमाक्षर है) + शृणोति
↓ श् + ऋणोति (श् के बाद स्वर है) अतः
↓ विकल्प से
= च् छ्
= त च् + छ् + ऋणोति
= तच्छृणोति
= तच्शृणोति (भी विकल्प से हो सकता है।)

तत् (वर्ग का प्रथमाक्षर है) + शिवम्
↓ श् + इवम् (श् के बाद स्वर है) अतः
↓ विकल्प से
= च् छ्
= त च + छि + इवम्
= तच्छिवम्
= तच्शिवम् (यदि श् को छ् न करें तो विकल्प से हो सकता है।)

तत् (वर्ग का प्रथमाक्षर है) + शरेण
↓ श् + अरेण + एणा (श् के बाद स्वर एवं र् वर्ण है) अतः
↓ विकल्प से
= त च् + छ् + रेण
= तच्छरेण
= तच्शरेण(यदि श् को छ् न करें तो विकल्प से हो सकता है।)

तत् (वर्ग का प्रथमाक्षर है) + श्लोकेन
+ श् + लोकेन (श् के बाद ल् वर्ण है) अतः
↓ विकल्प से
= त च् छ् + लोकेन
= तच्छ्लोकेन
= तच्श्लोकेन (यदि श् को छ् न करें तो विकल्प से हो सकता है।)

© New Saraswati House (India) Private Limited

(*ii*) यदि पदान्त ह्रस्व स्वर के बाद छ् वर्ण हो तो उससे पहले च् वर्ण जोड़ दिया जाता है; जैसे–

वि	+	छेदम्	=	विच्छेदम्		शिव	+	छाया	=	शिवच्छाया
स्निग्ध	+	छाया	=	स्निग्धच्छाया		गज	+	छाया	=	गजच्छाया
यस्य	+	छाया	=	यस्यच्छाया		अनु	+	छेदः	=	अनुच्छेदः
स्व	+	छन्दम्	=	स्वच्छन्दम्		शिव	+	छत्रम्	=	शिवच्छत्रम्
तरु	+	छाया	=	तरुच्छाया्		एक	+	छत्रम्	=	एकच्छत्रम्

4. जश्त्वम्–पद के अंत में यदि किसी भी वर्ग का पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा वर्ण या श्, स्, ष्, ह् हो तथा उसके आगे कोई भी अन्य वर्ण आए तो पद के अन्तिमाक्षर को उसी वर्ग का तीसरा वर्ण होता है।

क्, ख्, ग्, घ्	→	ग्		च्, छ्, ज्, झ्	→	ज्
ट्, ठ्, ड्, ढ्	→	ड्		त्, थ्, द्, ध्	→	द्
प्, फ्, ब्, भ्	→	ब्				

यद्यपि नियम वर्गों के चारों अक्षरों को तृतीयाक्षर करता है फिर भी भाषा में केवल प्रथम अक्षर के तृतीयाक्षर में बदलने के उदाहरण ही मिलते हैं; जैसे–

वाक्	+	अर्थौ		सत्	+	आचारः		षट्	+	आननः		सुप्	+	अन्तः
↓				↓				↓				↓		
ग्				**द्**				**ड्**				**ब्**		
= वाग्	+	अर्थौ		= सद्	+	आचारः		= षड्	+	आननः		= सुब्	+	अन्तः
= वागर्थौ				= सदाचारः				= षडाननः				= सुबन्तः		

5. श्चुत्वम्–यदि स तथा तवर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) के साथ श् या च्, छ्, ज्, झ्, ञ् में से कोई भी वर्ण आ रहा हो तो क्रमशः तवर्ग को चवर्ग तथा स् को श् हो जाता है।

स्	→	श्		त्	→	च्
थ्	→	छ्		द्	→	ज्
ध्	→	झ्		न्	→	ञ्

उदाहरण–

सत्	+	चित्		उद्	+	ज्वलः		मनस्	+	शान्तिः		कस्	+	चित्
↓				↓				↓				↓		
च्				**ज्**				**श्**				**श्**		
= सच्	+	चित्		= उज्	+	ज्वलः		= मनश्	+	शान्तिः		= कश्	+	चित्
= सच्चित्				= उज्ज्वलः				= मनश्शान्तिः				= कश्चित्		

6. ष्टुत्वम्–यदि पदान्त स् तथा त्, थ्, द्, ध्, न् के बाद उत्तर पद का पूर्व पद ष् या ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् हो तो क्रमशः स् को ष् तथा तवर्ग (त्, थ्, द् ध्, न्) को टवर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्) हो जाते हैं;

स् ——जैसे——→ ष्

त्, थ्, द्, ध्, न् → ट्, ठ्, ड्, ढ्, न्

© New Saraswati House (India) Private Limited

तत् + डमरुः	षष् + थः	तत् + ढौकते	कृष् + तः
↓	↓	↓	↓
ड्	ठः	ड्	टः
= तड् + डमरुः	= षष् + ठः	= तड् + ढौकते	= कृष् + टः
= तड्डमरुः	= षष्ठः	= तड्ढौकते	= कृष्टः

7. चत्व सन्धिः–किसी भी वर्ग के तीसरे या चौथे वर्ण से परे यदि किसी भी वर्ग का पहला, दूसरा अथवा श्, ष्, स् में से कोई वर्ण आ जाए तो तीसरे और चौथे वर्ण को अपने वर्ग का ही पहला वर्ण हो जाता है।

विपद् + सु	छेद् + ता	शरद् + सु	ककुभ् + सु
↓	↓	↓	↓
त्	त्	त्	प्
= विपत् + सु	= छेत् + ता	= शरत् + सु	= ककुप् + सु
= विपत्सु	= छेत्ता	= शरत्सु	= ककुप्सु

8. तुगागम–इसे जानने से पहले आगम और आदेश को समझना आवश्यक है।

आगम–मित्र की तरह किसी वर्ण को हटाए बिना वर्ण का आ जाना आगम कहलाता है; यथा–वि + छेदम् = विच्छेदम् में च् बिना किसी वर्ण को हटाए मित्रवत् आया है।

मित्रवत् आगम =

आदेश–शत्रु की तरह किसी वर्ण को हटाकर यदि कोई वर्ण आए तो वहाँ आदेश होता है; यथा–नर + इन्द्रः = नरेन्द्रः में अ + इ दोनों के स्थान पर ए का आना आदेश है।

शत्रुवत् आदेश =

= आदेश

तुगागम में पद के अंत में आने वाले न् के बाद यदि श् आ जाए तो दोनों के बीच में विकल्प से तुक् (त्) आ जाता है। विकल्प अर्थात् तुक का आना जरूरी नहीं यह आ भी सकता है और नहीं भी।

1. सन् + शम्भुः
   = सन् + त् + शम्भुः (तुक् का आगम)
   ↓ ↓ ↓
   ञ् + च् + छ् (श् को छ् तथा श्चुत्व संधि का नियम भी लगेगा)
   = सञ्च्छम्भुः (तुक् का आगम विकल्प से है इसलिए यदि 'त्' न हो तो दूसरा रूप होगा)
   = सञ्छम्भुः

© New Saraswati House (India) Private Limited

2. तिष्ठन् + शेते

= तिष्ठन् + त् + शेते (तुगागम्)

= तिष्ठन् + त् + शेते

↓ ↓ ↓

श् + च् + छ् (श् को छ् और श्चुत्व संधि होने पर)

= तिष्ठञ्च्छेते

= तिष्ठञ्छेते (विकल्प से होने के कारण)

3. गच्छन् + शेते

= गच्छन् + त् + शेते (तुगागम)

↓ ↓ ↓

श् + च् + छ्

= गच्छञ्च्छेते

= गच्छञ्छेते (विकल्प होने के कारण)

विसर्ग सन्धिः

विसर्ग सन्धि– विसर्ग से परे स्वर (अच्) या व्यंजन आने पर विसर्ग के स्थान पर जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे– रामः + अगच्छत् = रामोऽगच्छत्।

विशेष– विसर्ग को संस्कृत में विसर्जनीय भी कहते हैं। इन्हें हल्का या आधा 'ह्' समझना चाहिए। इसका उच्चारण आधे 'ह्' के समान ही होता है।

1. **विसर्ग को स्**– यदि वर्गों के प्रथम वर्ण में से कोई विसर्ग के बाद आए, तो विसर्ग को स् हो जाता है; जैसे–

   नमः + ते = नमस्ते

   नमः + करोति = नमस्करोति

   मनः + तस्य = मनस्तस्य

   इतः + ततः = इतस्ततः

2. **विकल्प से श् ष् स्**– यदि विसर्ग के बाद श् ष् स् में से कोई वर्ण आए, तो विसर्ग के स्थान पर क्रम से श् ष् स् विकल्प से (हो भी सकते हैं, नहीं भी) हो जाते हैं; जैसे–

   रामः + शेते = रामश्शेते, रामः शेते

   देवः + शेते = देवश्शेते, देवः शेते

   अग्निः + षष्ठः = अग्निष्षष्ठः, अग्निः षष्ठः

3. (क) **विसर्ग को नित्य उ**– (गुण संधि के नियम के अनुसार 'उ' को 'ओ' हो जाता है।)
   यदि विसर्ग ह्रस्व अकार अ के बाद आया हो और विसर्ग के बाद भी अ हो, तो विसर्ग को र्

© New Saraswati House (India) Private Limited

और 'र्' को उ हो जाता है। फिर गुण संधि के नियम से 'उ' को ओ हो जाता है; जैसे–

देव: + अगच्छत् = (व: + अ)

देव उ + अगच्छत् = देवो अगच्छत्

इसके पश्चात् स्वर संधि के अंतर्गत पूर्वरूप हो जाता है। अत: देवोऽगच्छत् हो जाता है।

मानव: + अयम् = मानवो अयम् = मानवोऽयम्

राम: + अवदत् = रामो अवदत् = रामोऽवदत्

अत: + अहम् = अतो अहम् = अतोऽहम्

(ख) **विसर्ग को नित्य उ**– यदि ह्रस्व 'अ' से परे विसर्ग हों और उसके परे हश् (ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द) हों, तो विसर्ग को र् और 'र्' को उ फिर 'उ' को ओ हो जाता है, पूर्वरूप नहीं बनता; जैसे–

स्मराम: + वयम् = स्मरामोवयम्

मन: + रमा = मनोरमा

मन: + रथ: = मनोरथ:

पय: + द: = पयोद:

यश: + दा = यशोदा

4. **विसर्ग का लोप**– विसर्ग से पूर्व यदि आ हो और आगे कोई स्वर या वर्गीय 3, 4, 5, य र ल व ह हों, तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे–

जना: + अवदन् = जना अवदन्

नरा: + हसन्ति = नरा हसन्ति

अश्वा: + धावन्ति = अश्वा धावन्ति

5. **विसर्ग को र्**– अ के विसर्ग के अतिरिक्त अन्य स्वरों के विसर्ग के बाद कोई हश् वर्ण या स्वर हो, तो विसर्ग को र् हो जाता है; जैसे–

मुनि: + अवदत् = मुनिरवदत्

अग्नि: + अत्र = अग्निरत्र

वह्नि: + ज्वलति = वह्निर्ज्वलति

अरि: + नयति = अरिर्नयति

6. **विसर्ग को श् ष् स्**– विसर्ग के बाद च् छ्, ट् ठ् और त् थ् होने पर उनका क्रमश: श्, ष् और स् हो जाता है; जैसे–

हरि: + चञ्चल: = हरिश्चञ्चल:

नीता: + टीका = नीताष्टीका

कृष्ण: + टीकते = कृष्णष्टीकते

मानव: + तरति = मानवस्तरति

© New Saraswati House (India) Private Limited

7. **विसर्ग का लोप और पूर्व स्वर को दीर्घ**– यदि विसर्ग अथवा र् के बाद र हो, तो विसर्ग अथवा र् का लोप और पूर्व स्वर को दीर्घ हो जाता है; जैसे–

पुनः + रमते
पुनर् + रमते
= पुनारमते

हरिः + रम्यः
हरिर् + रम्यः
= हरीरम्यः

ध्यातव्यम्

- जिन वर्णों में संधि का नियम लागू हो परिवर्तन उन्हीं वर्णों में होता है। अन्य वर्ण अपरिवर्तित रूप में यथावत् रहते हैं।
- शुद्ध व्यंजनों का स्वरों के साथ बिना किसी परिवर्तन के मिलना संयोग कहलाता है।
- संधि करने के बाद दोनों पद मिलकर एक पद बन जाते हैं।
- संधि करते समय जब भी स्वर को व्यंजन से अलग करें तो व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगा लें तथा स्वर जोड़ने पर हल् चिह्न हटा लें।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. संधि के मुख्य तीन भेद हैं–स्वर, व्यंजन तथा विसर्ग।
2. जब परिवर्तन स्वरों के कारण हो तो स्वर संधि, व्यंजनों तथा विसर्गों के कारण हो तो क्रमशः व्यंजन तथा विसर्ग संधि कहलाती है।
3. सजातीय स्वर पास आने पर दोनों के स्थान पर उसी जाति का एक दीर्घ स्वर हो जाता है।
4. जहाँ संधि का नियम विकल्प से लागू हो वहाँ संधि किए बिना तथा संधि युक्त दोनों पद मान्य होते हैं।
5. परसवर्ण संधि में अनुस्वार पदान्त नहीं होना चाहिए तथा इसमें आगे आने वाले व्यंजन का ही पंचमाक्षर अपदान्त अनुस्वार को होगा।
6. वाक्य के अंतिम पद के अंत में अनुस्वार लगाना अशुद्ध है।
7. छत्व सन्धि में 'श्' को 'छ्' विकल्प से होता है।
8. तृतीयाक्षर नियम में पूर्व पद के अन्तिमाक्षर को ही उसी वर्ग का तृतीय वर्ण होता है।
9. मित्रवत् आना आगम कहलाता है तथा शत्रुवत् किसी को हटाकर आना आदेश कहलाता है।
10. विसर्ग का न दिखना ही उसका लोप माना जाएगा।
11. विसर्गों का र्, स्, श्, ष् और उ में परिवर्तन होता है।
12. पदों में संधि करना या न करना वक्ता/लेखक की इच्छा पर निर्भर करता है।

© New Saraswati House (India) Private Limited

प्रायोगिकाभ्यासः

I. कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा रञ्जितपदेषु सन्धिः सन्धिच्छेदं वा कुरुत।

(कोष्ठक से उचित पद चुनकर रंगीन पदों में संधि अथवा संधि-विच्छेद कीजिए।)

1. **सोऽपि** अत्र एव आगच्छति। .....+..... (सो + अपि/सः + अपि)
2. **यदि + अपि** सः बालः विकलाङ्गः तथापि परम ज्ञानवृद्धः अस्ति। ..... (यद्यापि/यद्यपि)
3. सा **गायिका** रमेशनगरे वसति। .....+..... (गै + इका/गाय + इका)
4. भक्तः **देवालयम्** गच्छति। .....+..... (देवा + लयम्/देव + आलयम्)
5. वसन्ते मन्दः-मन्दः **पवनः** वहति। .....+..... (पौ + अनः/पो + अनः)
6. **हिमालयः** भारतस्य उत्तरस्याम् स्थितः अस्ति। .....+..... (हिमा + लयः/हिम + आलयः)
7. **मातृ + आज्ञाम्** मत्वा रामः सुखी अभवत्। ..... (मातृज्ञाम्/मात्राज्ञाम्)
8. नगरे जनाः **महोत्सवे** नृत्यन्ति। .....+..... (महो + उत्सवे/महा + उत्सवे)
9. **विद्या + अर्थिनः** ध्यानेन पठन्ति। ..... (विद्यार्थीनः/विद्यार्थिनः)
10. अहम् अपि **वधू + उत्सवे** गास्यामि। ..... (वध्वुत्सवे/वधूत्सवे)

II. सन्धिः सन्धिच्छेदं वा कुरुत।

(संधि अथवा संधि-विच्छेद कीजिए।)

1. गण + ईशः = ...
2. चन्द्रोदय = ...+.....
3. देव + ऋषि = ...
4. चलाचले = ...+.....
5. हर्षोल्लासः = ...+.....
6. वसन्त + उत्सवे = ...
7. अप्येवम् = ...+.....
8. सिंहः + गर्जति = ...
9. एषः + अतीव = ...
10. बालः + उत्तिष्ठति = ...
11. यशोगानम् = ...+.....
12. मनः + हरः = ...
13. स्व + छन्दः = ...
14. सन्धिच्छेदः = ...
15. अतः + एव = ...

III. सन्धिम् कृत्वा सन्धेः नाम अपि लिखत।

(संधि करके संधि का नाम भी लिखिए।)

1. अनु + छेदः = ...
2. सीता + छाया = ...
3. तत् + श्लोकेन = ...

© New Saraswati House (India) Private Limited

4. तत् + श्रुत्वा = ...
3. अम् + काः = ...
6. रामस् + च = ...
7. अच् + अन्तः = ...
8. सत् + चरित्रम् = ...
9. अप् + जः = ...
10. षट् + आननः = ...
11. अच् + आदिः = ...

IV. उचितं मेलनं कुरुत।

(उचित मिलान कीजिए।)

(क) प्रेम् + खणम्	(*i*) परिच्छेदः
(ख) यस्यच्छाया	(*ii*) लक्ष्मीच्छाया
(ग) मत् + शिरः	(*iii*) दिवङ्गतः
(घ) कण्ठः	(*iv*) लीला + छत्रम्
(ङ) स्व + छः	(*v*) कम् + छः
(च) परि + छेदः	(*vi*) स्वच्छः
(छ) लक्ष्मी + छाया	(*vii*) यस्य + छाया
(ज) लीलाच्छत्रम्	(*viii*) मच्छिरः
(झ) दिवम् + गतः	(*ix*) प्रेङ्खणम्

V. रञ्जितेषु पदेषु सन्धिच्छेदम् कुरुत।

(रंगीन पदों में संधि-विच्छेद कीजिए।)

1. ग्रीष्मकाले **तरुच्छाया** तु जीवनम् एव। ..... + ...
2. एकम् **अनुच्छेदम्** लिखत। ..... + ...
3. श्री रामस्य राज्यम् **एकच्छत्रम्** आसीत्। ..... + ...
4. यत्र **तरुच्छाया** तत्र पथिकाः। ..... + ...
5. **तच्चित्रम्** पश्य। ..... + ...
6. सः **मच्छत्रुः** न अस्ति। ..... + ...
7. **तच्छ्रुत्वा** सः अहसत्। ..... + ...

© New Saraswati House (India) Private Limited